

# संवाद

सामान्य अंक, 2022

सं श्रुतेन गमेमहि  
मा श्रुतेन वि राधिषि  
-अथर्ववेद (1/1/4)

हम सब ज्ञान से युक्त हों,  
ज्ञान से कभी हमारा वियोग न हो



ISRO  
1,724 Tweets

Tweets Tweets & replies Media Likes

are still open. Details: [isro.gov.in/update/22-jun-...](https://isro.gov.in/update/22-jun-...)

9 150 1,033

**ISRO** @isro · 17 Jun

(1/2) आज हैदराबाद में संसदीय राजभाषा समिति ने राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, इसरो के साथ निरीक्षण किया। इस दौरान समिति ने मंत्रालय एवं विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में हो रहे राजभाषा हिंदी कार्यों का अवलोकन किया।  
#SecondSubCommittee  
#AzadiKaAmritMahotsav



6 140 1,063

**ISRO** @isro · 17 Jun

(2/2) Today, the Committee of Parliament on Official Language held an inspection meeting with National Remote Sensing Centre, ISRO in Hyderabad. The Committee inspected the works being done in Official Language Hindi in presence of Senior Officers of the Ministry and Department.

3 284 651



इसरो ISRO

एन आर एस सी



75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव

**संवाद**  
सामान्य अंक, 2022

**संरक्षक**

डॉ. प्रकाश चौहान  
निदेशक व अध्यक्ष, राकास

**सलाहकार**

विंग कमांडर (से.नि.)  
विभास सिंह गुप्ता  
नियंत्रक

**संपादक**

श्री राम प्रकाश यादव

**संपादक मंडल**

डॉ. एन. अपर्णा  
श्रीमती भावना सहाय  
श्रीमती जया सक्सेना  
श्री विजय शेखर रेड्डी  
श्री ओझा अनिल कुमार  
श्री रामराज रेड्डी

**आवरण एवं पत्रिका डिज़ाइन**

श्री रामराज रेड्डी

आवरण पृष्ठ पर एनआरएससी में संसदीय राजभाषा समिति के दौरे से संबन्धित तस्वीर एवं पार्श्व पृष्ठ पर हिंदी दिवस के दौरान आयोजित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों की तस्वीरों का कोलाज है।

**राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र**

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन  
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार  
बालानगर, हैदराबाद-500037

**अनुक्रमिका....**

इस अंक में...

विषय	पृष्ठ सं.
1 राजभाषा प्रतिज्ञा	
2 आमुख	
3 संदेश	
4 स्वतंत्र भारत की विकास-यात्रा में इसरो का योगदान	5
5 अनुवाद: एक भावाभिषेक	10
6 संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण / दौरे की मानक संचालन प्रक्रिया और अनुपालन	11
7 क्या पिता के प्यार को हम शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं?	13
8 गज़ल	14
9 टैक्स क्या है	15
10 महत्वपूर्ण घटनाएं	17
11 शिक्षा और मानव विकास	32
12 जीवन की रफ्तार...	33
13 भारत	33
14 वृत्तांत : हिमालय यात्रा	34
15 वृत्तांत : दिल्ली-आगरा-जम्मू यात्रा	38
16 कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होगी.....@-30	42
17 मेरा वतन	44
18 विदर्भ के पिछड़ेपन के जिम्मेदार कौन ?	45
19 उपलब्धियां	45
20 मदद के हाथ	46
21 वाइट (सफेद) ग्रेवी पनीर	46
22 सुभाषित सुविचार	47
23 मेरा देश	47
24 पृथ्वी	48
25 समय का सदुपयोग	48
26 आजादी का अमृत महोत्सव	49
27 रिटायरमेन्ट (जिन्दगी से नहीं, केवल ओफीस से)	50
28 सायोनारा	51
29 उपलब्धियां	52

\*प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो। संवाद के प्रकाशन में संपादक मंडल के साथ-साथ एनआरएससी की मुद्रण सुविधा, फोटो संसाधन समूह का भी विशेष योगदान है। वर्ष के दौरान एनआरएससी की गतिविधियों का फोटो संग्रह फोटो संसाधन समूह द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। अतः संवाद, मुद्रण सुविधा एवं फोटो संसाधन के प्रति आभारी है। पत्रिका पूर्ण रूप से हिंदी अनुभाग द्वारा तैयार कर आंतरिक रूप से मुद्रित की गई है। इसे एनआरएससी की वेबसाइट [www.nrsc.gov.in](http://www.nrsc.gov.in) तथा [rajbhasha.gov.in](http://rajbhasha.gov.in) के ई-पत्रिका पुस्तकालय में भी पढ़ सकते हैं।



# राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

**जय राजभाषा ! जय हिंद !**

चलो मिलकर  
मुहिम चलाये,  
आज ही से.  
**हिंदी अपनाए**

भारत सरकार  
अन्तरिक्ष विभाग

## राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र

बालानगर, हैदराबाद-500 037, तेलंगाना, भारत  
टेलिफोन : +91 40 23884001 / 04  
फैक्स : +91 40 23877210



Government of India  
Department of Space

## National Remote Sensing Centre

Balanagar, Hyderabad-500 037, Telangana, India  
Telephone: +91 40 23884001 / 04  
Fax : +91 40 23877210

डॉ. प्रकाश चौहान / Dr. Prakash Chauhan

निदेशक / Director

### आमुख

प्रिय पाठकों,

एनआरएससी गृह-पत्रिका "संवाद-2022" का 22वां अंक आपके हाथ में सौंपते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है। पिछले 22 वर्षों से संवाद के जरिए आप एनआरएससी की गतिविधियों से परिचित हो रहे हैं। हर वर्ष में हम बीते हुए समय की उपलब्धियों को याद करने के साथ-साथ नई चुनौतियों का सामना करने की तैयारी भी करते हैं। मुझे बेहद खुशी है कि संवाद का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है और आप सब इसका हिस्सा बनकर इसे संवारते रहे हैं।



राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एनआरएससी) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख घटक केंद्रों में से एक है, जो उपग्रह आंकड़ा अधिग्रहण, अभिलेखीय, संसाधन, प्रसार, सुदूर संवेदन अनुप्रयोग, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के माध्यम से सुदूर संवेदन कार्यक्रम के ग्राउंड सेगमेंट के लिए जिम्मेदार है। इसके पांच क्षेत्रीय केंद्र- बंगलुरु, नागपुर, कोलकाता, जोधपुर और नई दिल्ली में स्थित हैं, जो क्षेत्र/क्षेत्र विशिष्ट सुदूर संवेदन अनुप्रयोग जरूरतों को पूरा करते हैं। शादनगर स्थित भू-केंद्र को सुदूर संवेदन गतिविधियों की पूरी श्रृंखला के संचालन के लिए एक पूर्ण केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

देश "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहा है। इस महोत्सव के आयोजन में जनसंपर्क गतिविधियों के अंतर्गत तकनीकी विषयों पर श्रृंखला व्याख्यान, प्रदर्शनी (स्पेस ऑन व्हिल्स) के साथ-साथ स्कूल / कॉलेज के बच्चों तक अंतरिक्ष अनुसंधान के ज्ञान को प्रसारित किया जा रहा है। इसी कड़ी में इसरो के 75 प्रमुख गतिविधियों पर **द्विभाषी कॉफी टेबल बुक** और एनआरएससी के प्रमुख **75 सामाजिक अनुप्रयोगों को द्विभाषी** में तैयार किया गया है। एनआरएससी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के लिए केंद्र/राज्य सरकारों को विकेंद्रीकृत योजना के लिए अंतरिक्ष सूचना समर्थन, आपातकालीन प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस (एन.डी.ई.एम.) तथा अन्य एजेंसियों को सहायता प्रदान करता है।

एनआरएससी वैज्ञानिक एवं तकनीकी गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अंतर्गत प्रतिवर्ष संवाद पत्रिका के दो अंक, एनआरएससी समाचार पत्र (पी2पी) के छमाही अंक, गुरुवार बुलेटिन के साथ - साथ प्रयोक्ता संपर्क बैठक में भी हिंदी के सत्र का आयोजन किया जाता है। हाल ही में, संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति ने एनआरएससी का निरीक्षण किया और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की सराहना की है। इसरो के राजभाषा कर्मियों और अन्य अधिकारी/कर्मचारियों के समर्पित हिंदी प्रेम के परिणामस्वरूप वर्ष 2021-22 के लिए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत के दौरान अंतरिक्ष विभाग को राजभाषा कीर्ति-प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में संवाद पत्रिका और निखरेगी तथा सभी वर्ग के पाठकों में रुचि जागृत करेगी। संवाद पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी को शुभकामनाएं....

डॉ. प्रकाश चौहान)

निदेशक एवं

अध्यक्ष, राकास (एनआरएससी)



भारत सरकार  
अन्तरिक्ष विभाग

## राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र

बालानगर, हैदराबाद-500 037, तेलंगाना, भारत  
टेलिफोन : +91 40 23879572-76  
+91 40 23879261-65  
फैक्स : +91 40 23878648

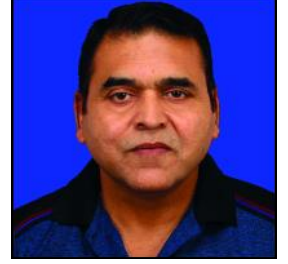


Government of India  
Department of Space

**National Remote Sensing Centre**  
Balanagar, Hyderabad-500 037, Telangana, India  
Telephone : +040-23879572-76  
+040-23879261-65  
Fax : +040-23878648

## सदेश

गृह पत्रिकाएं किसी भी संगठन के कार्मिकों को एक रचनात्मक मंच उपलब्ध कराती हैं, जिसके माध्यम से वे अपनी लेखन प्रतिभा निखारते हैं और अन्य कर्मचारियों को सूचनापरक जानकारी प्रदान करते हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। राजभाषा अर्थात् राजकाज की भाषा, सरकार और आम जनता के बीच संवाद की भाषा है। राजभाषा में कार्य करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है।



इसरो हमेशा से ही राजभाषा के प्रति समर्पित रहा है और दूसरे कार्यालयों के लिए मिशालें पेश करते रहे हैं। हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा एनआरएससी का निरीक्षण किया गया है, जिसमें तत्कालीन माननीय संयोजक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अक्सर तकनीकी संगठन हिंदी में कार्य करने में असमर्थता जाहिर करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी संयोजक महोदया अक्सर निरीक्षण के दौरान कहती हैं कि जब अंतरिक्ष विभाग जैसा वैज्ञानिक और तकनीकी संस्थान हिंदी में काम कर सकता है तो अन्य क्यों नहीं? इसरो के राजभाषा कर्मियों और अन्य कर्मचारियों के हिंदी के प्रति निष्ठा के कारण अंतरिक्ष विभाग को वर्ष 2021-22 में 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग के वर्ग में प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यही कारण है कि गृह मंत्रालय ने भी हमें छठवीं बार कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति से पुरस्कृत किया है।

हमारा प्रयास है कि कार्यालय में राजभाषा का उपयोग हर क्षेत्र में हो जैसे- संविधान दिवस, एकता दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, सतर्कता जागरुकता सप्ताह, स्वच्छता पखवाड़ा आदि। हमने अपने कार्यालय की ओर से प्रकाशित समाचार पत्रिका पिक्सैल टू पीपुल का भी हिंदी रूपांतरण प्रकाशित कर जन-साधारण के लिए वेबसाइट पर उपलब्ध किया है। इसके साथ ही हमने अपने आंतरिक पोर्टल डीक्स्ट्रा पर ई-लर्निंग का प्रावधान किया है, जिसमें प्रशासन/तकनीकी/राजभाषा विषयों पर कर्मचारियों का ज्ञान बढ़ाने का प्रयास किया गया है, ताकि कर्मचारीगण तकनीकी एवं प्रशासन के साथ-साथ राजभाषा हिंदी से संबंधित नियमों का ज्ञान भी अर्जित कर सकें।

एनआरएससी गृह-पत्रिका संवाद में हर वर्ष विविध विषयों पर नए-नए लेख एवं लेखक जुड़ते जा रहे हैं। आशा है कि आनेवाले वर्षों में, संभवतः और भी नए लेखक हमारी पत्रिका से जुड़ेंगे और हिंदी साहित्य का संग्रह तैयार करने में हमारा सहयोग प्रदान करेंगे।

शुभकामनाएं सहित.....

*विभास गुप्ता*

(वि.का.(से.नि.) विभास सिंह गुप्ता)  
नियंत्रक, एनआरएससी



## स्वतंत्र भारत की विकास-यात्रा में इसरो का योगदान

शिवम् त्रिवेदी  
आरआरएससी, बेंगलुरु



**प्रस्तावना** - भारतवर्ष की आज़ादी के गौरवशाली 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। स्वतंत्रता के बाद से आज तक विशेषकर पिछले कुछ दशकों में भारत ने विश्व में उभरती हुई एक महाशक्ति के रूप में जो अपना मुकाम बनाया है, उस पर आज सभी भारतीयों को गर्व है। आज़ादी के पश्चात् भारत के समक्ष राष्ट्र-निर्माण संबंधी अनेक चुनौतियां थीं, जिनमें प्रमुख थी- देश का सामाजिक और आर्थिक विकास। किसी भी राष्ट्र के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की बहुत अहम भूमिका होती है। समग्र राष्ट्रीय विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की अतुलनीय क्षमता का अनुभव करने वाले पहले कुछ देशों में से भारत भी एक था। राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रयास के सकारात्मक सामाजिक प्रभाव जितना हम जानते हैं या समझते हैं, उनसे कहीं ज्यादा हैं। बीते दशकों में अपनी अंदरूनी समस्याओं और विविध चुनौतियों के बावजूद भारत ने विश्व में अपनी पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में बनाई है, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का भी अमूल्य योगदान है। वर्ष 1962 में स्थापित 'अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भारतीय राष्ट्रीय समिति' (इन्कोस्पार) के अधिस्थापन द्वारा 1969 में भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइजेशन, इसरो) की स्थापना हुई, जिसका मुख्यालय बेंगलुरु में स्थित है। इस लेख में इसरो द्वारा अंतरिक्ष विज्ञान व प्रौद्योगिकी के माध्यम से देश की विकास-यात्रा और राष्ट्रीय प्रगति में दिए गए बहुमूल्य योगदान की चर्चा की गई है।

### राष्ट्र-निर्माण में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय हित में अंतरिक्ष तकनीक एवं उसके अनुप्रयोगों का विकास करना है। भारत में आधुनिक अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई थे। पिछले पांच-छः दशकों में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम ने राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु अंतरिक्ष अनुप्रयोगों की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रत्येक विफलता से सीख प्राप्त कर, भावी सफलता का मार्ग प्रशस्त हुआ और इसरो राष्ट्रीय विकास के महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में उभर कर सामने आया। भारतीय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए संपूर्ण आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रही है। भारत ने अपने सीमित एवं कम बजट में भी उच्च अंतरिक्ष तकनीक को हासिल करने में सफलता प्राप्त की और आज वह श्रेष्ठ अंतरिक्ष तकनीक वाले देशों की कतार में शामिल है। भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों एवं अभियंताओं के अथक परिश्रम से स्वतंत्र भारत की इस विकास यात्रा में नए-नए कीर्तिमान बने और राष्ट्रीय विकास की गति भी तेज हुई। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के अंतर्गत 112 अंतरिक्ष मिशन, 84 प्रक्षेपण मिशन, 12 छात्र उपग्रह, 2 पुनः-प्रवेश मिशन और 34 देशों के 342 विदेशी प्रक्षेपणों का श्रेय इसरो को जाता है। इतना ही नहीं, इसरो ने अपनी वाणिज्यिक शाखा द्वारा वैश्विक ग्राहकों के लिए उनके विदेशी उपग्रहों को स्वदेशी यान (पी.एस.एल.वी.) से प्रक्षेपित कर, विदेशी मुद्रा में करीब 279 मिलियन अमेरिकी डॉलर भी कमाए हैं। भारत के पास विश्व स्तर के उपग्रहों के निर्माण व संचालन के लिए स्वदेशी क्षमता है, जिनमें संचार और पृथ्वी-अवलोकन से संबंधित उपग्रह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भारत की उपग्रह क्षमताओं ने देश के लिए सामाजिक सेवाओं व सुविधाओं पर केंद्रित कई सफल अनुप्रयोगों को बखूबी सक्षम किया।

### अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के प्रमुख सामाजिक उपयोग

देश के विकास हेतु अनुप्रयोगों में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की क्षमताएँ अपार हैं। अंतरिक्ष अनुप्रयोग से संबंधित प्रमुख क्षेत्र हैं - उपग्रह संचार, आपदा प्रबंधन सहायता, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, उपग्रह नौवहन, अंतरिक्ष विज्ञान और ग्रहीय अनुसंधान, समानव अंतरिक्ष उड़ान, क्षमता निर्माण एवं जनसम्पर्क गतिविधियाँ आदि। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रमुख उपयोगों और क्षमताओं की कुछ दृश्य-झलकियाँ आप चित्र-1 में देख सकते हैं।

तालिका-1 में इन्हीं खंडों का विस्तृत रूप, भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रमुख सामाजिक एवं वैज्ञानिक उपयोगों के विशिष्ट उदाहरणों / क्षेत्रों सहित प्रस्तुत है। प्रत्येक खंड के कुछ प्रमुख सामाजिक उपयोगों का विस्तार से वर्णन भी लेख में आगे किया गया है।





चित्र 1: भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रमुख उपयोग व क्षमताएँ

बहु-चरणीय प्रमोचन यान (रॉकेट) आंध्र-प्रदेश में नेल्लूर ज़िले के श्रीहरिकोटा से छोड़े जाते हैं जो अपने शीर्ष भाग पर संलग्न कृत्रिम उपग्रह को विशिष्ट उद्देश्य के अंतर्गत, अंतरिक्ष की निर्धारित कक्षा में ले जाते हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग मुख्यतः संचार, सुदूर संवेदन और नौवहन उपग्रहों के सम्मिलित उपयोग के माध्यम से कार्यान्वित किये जाते हैं और ज़मीनी क्षेत्र निरीक्षणों द्वारा उनकी पुष्टि की जाती है। संचार उपग्रह आम तौर पर संचार, दूरदर्शन प्रसारण, मौसम-विज्ञान, आपदा चेतावनी आदि की ज़रूरतों के लिए भू-तुल्यकाली कक्षा में कार्य करते हैं। भारत में आज टेलीविजन, डी.टी.एच. प्रसारण, डिजिटल उपग्रह समाचार समाहरण तथा वी-सैट जैसे विविध उपयोगों में उपग्रह संचार का प्रयोग विस्तृत व सर्वव्यापी हो गया है, जो उपग्रह संचार आवरण व पहुँच के कारण ही सम्भव हो सका। सुदूर संवेदन उपग्रह मुख्यतः प्राकृतिक संसाधन मॉनिटरिंग और प्रबंधन के लिए उपयोग किये जाते हैं तथा ये सूर्य-तुल्यकाली ध्रुवीय कक्षा में कार्य करते हैं। सुदूर संवेदन आंकड़े तथा चित्र प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी नियोजन एवं आपदा प्रबंधन सहायता में भी काफी मददगार सिद्ध होते हैं।

**उपग्रह संचार:** उपग्रह संचार प्रौद्योगिकी देश के दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक बड़ी संख्या में एक साथ पहुंचने की अनूठी क्षमता प्रदान करती है। उपग्रह संचार की क्षमताओं का शिक्षा और स्वास्थ्य, संचार, कौशल विकास एवं आजीविका के क्षेत्र जैसे सामाजिक उपयोगों में भी प्रयोग किया जाता है। सन् 2001 में शुरु हुआ उपग्रह संचार आधारित इसरो का दूर-चिकित्सा कार्यक्रम दूरदराज के क्षेत्रों में स्थित पूर्ण रूप से चिकित्सा सेवा न मिल पाने वाले रोगियों और विभिन्न सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों को संचार उपग्रहों के माध्यम जोड़कर उन्हें चिकित्सा उपलब्ध कराने का सुगम

तालिका1: भारतीय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के प्रमुख सामाजिक एवं वैज्ञानिक उपयोग के उदाहरण

क्र.सं.	शीर्षक / श्रेणी	सामाजिक एवं वैज्ञानिक उपयोग के प्रमुख उदाहरण / क्षेत्र
1.	उपग्रह संचार	दूर-संचार, दूर-दर्शन, दूर-चिकित्सा, दूर-शिक्षा, ग्राम संसाधन केंद्र, उपग्रह समाचार संग्रहण व कार्यक्रम प्रसारण, ब्रॉडबैंड, रेडियो, उपग्रह मौसम विज्ञान
2.	आपदा प्रबंधन सहायता	प्राकृतिक आपदा सहायता (चक्रवात, भू-स्खलन, जंगल की आग, भूकंप, कृषि-सूखा, बाढ़), उपग्रह समर्थित खोज एवं बचाव, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को सहयोग
3.	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	कृषि, मृदा, जल, वन, महासागर, भू-विज्ञान, खनिज संसाधन, शहरी व ग्रामीण विकास, जलवायु परिवर्तन अध्ययन, नवीकरणीय ऊर्जा, नीति नियोजन
4.	उपग्रह नौवहन	नाविक (भारतीय नौवहन उपग्रह समूह), गगन (जी.पी.एस. आधारित भू-संवर्धित नौसंचालन)
5.	वेब-पोर्टल	भुवन, भू-निधि, वेदास, मॉस्टैक, उत्तर-पूर्वी स्थानिक डाटा भंडार
6.	अंतरिक्ष संबंधी उपोत्पाद	कृत्रिम पॉलीयूरेथीन पैर, दंत सामग्री-एकमिड, मेडिकल ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर / वेंटिलेटर, अग्नि-शामक पाउडर, खोज-बचाव बीकन, विपत्ति चेतावनी प्रेषित्र
7.	क्षमता निर्माण व जनसंपर्क	संस्थान (आई.आई.एस.टी., आई.आई.आर.एस., एन.आर.एस.सी., सिसटिप, डेकू); कार्यक्रम (युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम, रेस्पॉन्ड परियोजना); अंतरिक्ष संग्रहालय व प्रदर्शनी (स्पार्क, थुम्बा स्पेस म्यूज़ियम, लॉन्च व्यू गैलरी); राजभाषा हिंदी में वैज्ञानिक लेखन एवं विज्ञान संचार
8.	अंतरिक्ष / ग्रहीय अनुसन्धान	चंद्रयान-1, मंगलयान, अंतरिक्ष कैप्सूल पुनर्प्राप्ति प्रयोग, चंद्रयान-2, एस्ट्रोसैट, आदित्य-एल1, गगनयान (समानव अंतरिक्ष उड़ान)

माध्यम है, इसका उपयोग एक बड़े पैमाने पर सामाजिक लाभ के लिए किया जा रहा है। जम्मू व काश्मीर, लद्दाख, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप समूह तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों सहित मुख्य भूमि के विभिन्न राज्यों व क्षेत्रों में यह व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। बैंकिंग क्षेत्रों में ए.टी.एम. को बैंकों से लिंक करने में सैटकॉम लिंक प्रमुख भूमिका निभाता है। दूर-शिक्षा कार्यक्रम पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण को अनुपूरण प्रदान करता है, प्रभावी शिक्षण प्रशिक्षण एवं गुणवत्ता संसाधन, व्यक्तियों और नई प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान कर, भारत के कोने-कोने तक स्कूलों, कॉलेजों एवं उच्च-स्तरीय शिक्षा का प्रसार करता है। इसरो द्वारा सामाजिक हित में किए जा रहे प्रयासों में दूर शिक्षा (टेली एजुकेशन), दूर-चिकित्सा (टेली-मेडिसिन) तथा ग्राम संसाधन केन्द्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

**आपदा प्रबंधन सहायता:** अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी प्रभावी आपदा प्रबंधन में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आपातकालीन संचार प्रणाली के तत्वों पर अंतरिक्ष आधारित आपदा प्रबंधन सहायता (डी.एम.एस.) प्रणाली का निर्माण किया गया है। आपदा प्रबंधन की विभिन्न अवस्थाओं में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विशेष रूप से उपयोगी है। आपदा-प्रभावित क्षेत्रों के सामान्यतया विशाल पैमाने को देखते हुए एवं जल्द-से-जल्द बचाव एवं राहत कार्यों को लागू करने में अंतरिक्ष आधारित उत्पाद बहुत ही प्रभावशाली साबित हुए हैं। इसरो विभिन्न देशों के साथ आपदा प्रबंधन के संबंध में अंतरराष्ट्रीय कार्य-ढाँचे, जैसे अंतर्राष्ट्रीय चार्टर 'अंतरिक्ष एवं मुख्य आपदाएं', प्रहरी एशिया, यूनिस्केप आदि के जरिए सक्रिय रूप से सम्मिलित है। इस कार्यक्रम में 6 आपदाएं - चक्रवात, भू-स्खलन, जंगल की आग, भूकंप, कृषि-सूखा, बाढ़ शामिल हैं। किसी भी आपदा की परिस्थितियों की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए, उपग्रह आंकड़ों को अर्जित व संसाधित करके कुछ ही घंटों के अंदर सम्बंधित प्रयोक्ता या संगठन को आंकड़ा उत्पाद एवं मूल्य वर्धित सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं। मानसून के दौरान बादलों की अत्याधिक मौजूदगी जैसी विषम परिस्थितियों में भी आंकड़ा अभिग्रहण के लिए रिसैट जैसे सूक्ष्मतरंग उपग्रहों का प्रयोग किया जा रहा है। किसी भी आपदा के दौरान पूर्व-चेतावनी प्रसारित करने के लिए उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था बहुत अधिक कारगर सिद्ध होती है। उपग्रहों द्वारा आपदा प्रभावित इलाकों का मानचित्रण करके राहत व बचाव में भी शीघ्र सहायता की जा सकती है।

**प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन:** सूक्ष्म स्तर पर विश्वसनीय सांख्यिकीय डेटाबेस की उपलब्धता, संसाधनों के उचित विकास, प्रबंधन एवं कुशल नीति नियोजन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियां, सुदूर संवेदन, उपग्रह संचार और नौवहन कई नवीन आयाम प्रदान कर रहे हैं। इससे सामाजिक लाभ के लिए विभिन्न प्रकार के डाटा और सूचना उत्पादों को सक्षम करने में मदद मिली है तथा



योजनाकारों और निर्णय लेने वालों को महत्वपूर्ण लोक-केंद्रित सेवाओं को अपनाने में सहायता भी मिलती है। कृषि, मृदा, जल, वन, महासागर, भू-विज्ञान, खनिज संसाधन, शहरी व ग्रामीण विकास, जलवायु परिवर्तन अध्ययन, पर्यावरण प्रदूषण, नवीकरणीय ऊर्जा से संबंधित क्षेत्रों में बहुत ही विस्तृत पैमाने पर अनुसंधान किया गया है। सुदूर संवेदी उपग्रहों के माध्यम से आज देश के अगम्य स्थानों, गहन जंगलों, विशाल मरुस्थलों एवं जल स्रोतों का सर्वेक्षण करने में अभूतपूर्व सहायता मिल रही है, जो भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए अत्यंत ही आवश्यक है।

**उपग्रह नौवहन:** उपग्रह आधारित नैविगेशन सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए, नागरिक उड्डयन आवश्यकताओं की उभरते मांगों को पूरा करने और उपयोगकर्ता को स्थिति, नैविगेशन व समय आधारित स्वतंत्र उपग्रह नैविगेशन प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपग्रह नौवहन कार्यक्रम अंतरिक्ष विभाग का एक प्रमुख कार्यक्रम है। उपग्रह नौवहन के मुख्यतः दो घटक हैं- i) जी.पी.एस. आधारित भू-संवर्धित नौसंचालन (जी.पी.एस. एडेड जिओ-ऑगमेंटेड नैविगेशन अर्थात 'गगन') एवं ii) भारतीय नौवहन उपग्रह समूह (नैविगेशन विद इंडियन कॉन्स्टलेशन अर्थात 'नाविक')। गगन इसरो और भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की एक संयुक्त परियोजना है। गगन विषुवतीय क्षेत्र को सेवा देने वाली विश्व की पहली अंतरिक्ष आधारित संवर्धन प्रणाली है, जिसे 2015 में राष्ट्र को समर्पित किया गया। गगन के कार्यान्वयन से विमानन क्षेत्र के लिए कई फायदे हैं, जैसे ईंधन की बचत, उपकरणों की लागत में बचत, उड़ान सुरक्षा, अंतरिक्ष क्षमता में वृद्धि, सामरिक क्षमता व विश्वसनीयता की वृद्धि, ऑपरेटरों के लिए काम के बोझ में कमी, हवाई यातायात के लिए समुद्री क्षेत्र की कवरेज पर नियंत्रण, उच्च सटीकता की स्थिति आदि। 'नाविक' आधारित वर्तमान में विद्यमान व उभरते हुए महत्वपूर्ण अनुप्रयोग हैं - मोबाइल में नाविक, ड्रोन में नाविक, व्हेकल ट्रैकिंग, नाविक मेसेजिंग सेवा, समय सम्बन्धी अनुप्रयोग आदि।

**इसरो के वेब-पोर्टल:** इसरो के अनुप्रयोगों एवं उत्पादों से सम्बंधित बहुत सी जानकारी एवं मानचित्र इसरो के वेब-पोर्टल पर भी उपलब्ध हैं ताकि सामाजिक उपयोग से संबंधित उत्पाद, बनाये गए मानचित्र एवं उपग्रह सुदूर संवेदन से प्राप्त चित्र प्रयोक्ताओं को सहज रूप में आसानी से प्राप्त हो सकें। इसरो का भू-पोर्टल 'भुवन', भारतीय भू-प्रेक्षण का प्रमुख मार्ग है जो उपग्रह आंकड़ा एवं मूल्य-वर्धित उत्पादों हेतु सूचना प्रदाता के रूप में कार्यरत है। साथ ही भुवन व्यापक अनुसंधान हेतु वैज्ञानिक परियोजनाओं की शुरुआत करने हेतु विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं एवं संगठनों को सहायता प्रदान करने का भी एक माध्यम है। 'भू-निधि' वेब पोर्टल सुदूर संवेदन संबंधी ऑनलाइन प्रयोक्ताओं हेतु निःशुल्क आंकड़ा वितरण में सहायता पहुंचाता है। यह वेब पोर्टल भारत के सुदूर संवेदन उपग्रहों की श्रृंखला समेत अन्य देशों के कई उपग्रहों के आंकड़ों को डाउनलोड करने के लिए एकल विंडो के रूप में कार्य करता है। वेदास' पोर्टल भू-प्रेक्षण डाटा एवं अभिलेखागार प्रणाली के दृश्यीकरण का माध्यम है। इस पोर्टल का व्यापक उद्देश्य इसरो के पृथ्वी-विज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान को समाज में लोकप्रिय बनाना और छात्रों व शोधकर्ताओं को इस तकनीक का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है। चंद्रयान एवं मंगलयान द्वारा क्रमशः चंद्रमा और मंगल ग्रह के लिए प्राप्त जानकारी से सम्बंधित संसाधित डाटा भी वेदास पर उपलब्ध हैं। 'मॉस्टैक' पोर्टल पर वायुमंडलीय और महासागर आधारित उपग्रह आंकड़े उपलब्ध हैं।

**अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी संबंधित उपोत्पाद:** भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए वैज्ञानिकों एवं अभियंताओं द्वारा मूल रूप से अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए विकसित कुछ प्रौद्योगिकियों को अद्वितीय सामाजिक लाभों हेतु कुछ ऐसे उत्पाद, सॉफ्टवेयर और सेवाओं को विकसित किया गया है जिनका प्रयोग नियमित रूप से अब चिकित्सा-क्षेत्र, आपदा सम्बन्धी सहायता, मौसम सम्बन्धी अध्ययन और पूर्वानुमान एवं अन्य कई छोटे-बड़े उद्योगों के लिए किया जाने लगा है। उदाहरण के लिए चिकित्सा सम्बन्धी कुछ क्षेत्रों में इस्तेमाल किये जाने वाले कृत्रिम पॉलीयूरेथीन पैर, कृत्रिम दंत सामग्री-एक्रीमिड, स्वदेशी मेडिकल ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर एवं वेंटिलेटर असल में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों की ही देन हैं। इसी प्रकार मौसम पूर्वानुमान के लिए स्वचालित मौसम केंद्र, डॉप्लर मौसम राडार, विंड प्रोफाइलर जैसे उपकरण; आपदा सहायता के क्षेत्र में अग्नि-शामक पाउडर, खोज व बचाव बीकन, विपत्ति चेतावनी प्रेषित्र जैसे उत्पाद और वनस्पति विज्ञान में अनुसंधान के लिए कृषि प्रकाशमापी या एग्रोफोटोमीटर की उत्पत्ति मूलतः भारत में अंतरिक्ष विज्ञान से ही हुई।

**क्षमता निर्माण और जनसम्पर्क:** राष्ट्रीय विकास के विभिन्न पहलुओं में अपने अप्रतिम योगदान एवं प्रौद्योगिक क्षमता के शांतिपूर्ण उपयोग के अतिरिक्त, इसरो ने देश-विदेश में ज्ञान-विज्ञान एवं अंतरिक्ष विज्ञान की शिक्षा में भी उत्कृष्ट भूमिका निभाई है। अंतरिक्ष विभाग के तत्वावधान में सुदूर संवेदन, खगोलिकी तथा खगोल भौतिकी, वायुमंडलीय विज्ञान तथा सामान्य कार्यों में अंतरिक्ष विज्ञान के लिए विभिन्न समर्पित अनुसंधान केंद्र तथा स्वायत्त संस्थान कार्यरत हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के

लाभों के बारे में जागरूकता फैलाने हेतु, इसरो द्वारा कई जनसम्पर्क गतिविधियां की जा रही हैं। भारत में अंतरिक्ष संग्रहालय, प्रदर्शनियाँ व प्रमोचन दृश्य सुविधायें भी निःशुल्क उपलब्ध हैं। अभी हाल ही में इसरो के वर्चुअल अंतरिक्ष संग्रहालय 'स्पार्क' का विमोचन भी किया गया है। भारत के स्पेस पोर्ट श्रीहरिकोटा में आम जनता एवं जिज्ञासु नागरिकों द्वारा रॉकेट के प्रमोचनों को देखने हेतु दिनोंदिन बढ़ती मांग को पूरा करने के उद्देश्य से प्रमोचन दृश्य दीर्घा (लॉन्च व्यू गैलरी) का निर्माण किया गया है, जहाँ से दर्शक खुली आँखों से वास्तविक समय में रॉकेट का प्रमोचन देख सकते हैं। एक वैज्ञानिक संगठन होते हुए भी इसरो ने राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देते हुए वैज्ञानिक लेखन के प्रचार-प्रसार व विज्ञान संचार में भी सराहनीय भूमिका निभाई है। इसमें द्विभाषी वेबसाइट, वार्षिक अंतरकेन्द्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन, हिंदी में वृत्त-चित्र (डॉक्यूमेंटरी) व तकनीकी गृह-पत्रिकाओं का प्रकाशन आदि, उल्लेखनीय हैं।

**अंतरिक्ष विज्ञान एवं ग्रहीय अनुसन्धान:** 'मंगलयान' या मंगल कक्षित्र मिशन, भारत का पहला अंतरग्रहीय मिशन था जिसे मंगल ग्रह के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए बनाया गया था। इसकी लागत 450 करोड़ रुपये थी जो कि मंगल के लिए आज तक का सबसे कम लागत वाला मिशन था। मंगल ग्रह की खोज के इतिहास में भारत पहले ही प्रयास में सफलता प्राप्त करने वाला विश्व का एकमात्र देश बन गया। चन्द्रयान-1 ने चन्द्रमा पर पानी होने की पक्की पुष्टि की। चन्द्रयान -1 ने चन्द्रमा के उत्तरी ध्रुव के क्षेत्र में बर्फ के रूप में पानी जमा होने की भी खोज की। चन्द्रमा का वैश्विक मानचित्र तैयार करना इस मिशन की एक और बड़ी उपलब्धि थी। 'गगनयान' इसरो की स्वदेशी 'समानव अंतरिक्ष उड़ान' महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसके लिए मानव अनुकूलित जी.एस.एल.वी. मार्क-III रॉकेट का प्रयोग किया जायेगा। इसके कार्यान्वयन के लिए 'समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र' की स्थापना 2019 में की गई। एस्ट्रोसैट भारत की पहली समर्पित बहु तरंगदैर्घ्य अंतरिक्ष वेधशाला है। आदित्य-एल1 सूर्य का अध्ययन करने वाला प्रथम भारतीय मिशन है, जो भारत की पहली समर्पित अंतरिक्ष आधारित सौर वेधशाला होगी।

**उपसंहार :** भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आम-आदमी और समाज को अंतरिक्ष विज्ञान व प्रौद्योगिकी द्वारा अधिकाधिक लाभ पहुँचाना है। 1962 में केरल के एक छोटे से गाँव थुम्बा से शुरू हुआ भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम अब भारतवर्ष में 23 स्थानों पर स्थित 45 केंद्रों / इकाइयों, करीब 16750 कर्मचारियों का एक विशाल समूह बन चुका है। अपनी स्थापना के पश्चात् इसरो ने पिछले कुछ दशकों में बहुत सी चुनौतियाँ का सामना किया और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होते हुए अनेकों उपलब्धियाँ हासिल कीं। प्रौद्योगिक क्षमता के अतिरिक्त, इसरो ने देश में विज्ञान-संचार एवं विज्ञान की शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के पास विश्व स्तर के उपग्रहों के निर्माण और संचालन के लिए स्वदेशी क्षमता है, जिनमें संचार और पृथ्वी-अवलोकन से संबंधित उपग्रह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विभिन्न अनुप्रयोग पिछले कुछ दशकों से देश के दूरदराज कोनों तक भी पहुंच रहे हैं। सितम्बर 2015 में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में एक राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसका विषय था 'अभिशासन व विकास में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित साधनों एवं अनुप्रयोगों का संवर्धन'। इसके आधार पर भारत सरकार के 60 मंत्रालयों / विभागों के साथ 158 अंतरिक्ष अनुप्रयोग परियोजनाओं की शुरुआत की गई। इसके अलावा भारत में अंतरिक्ष के आर्थिक उपयोग की अपार संभावनाएँ हैं जिसमें अब निजी क्षेत्र भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। हमारी युवा पीढ़ी को भविष्य में अंतरिक्ष संबंधी और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य करने का अवसर और प्रेरणा भी मिली है। एक तरह से स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय विकास और इसरो द्वारा भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का विकास सामानांतर रूप से हुआ है तथा दोनों ही एक-दूसरे के अनुपूरक एवं संपूरक हैं। 2016 में भारत में पहली बार छपे दो हजार रुपए के नोट के पिछले हिस्से में 'मंगलयान' की छवि का चित्रण भारत की असीम वैज्ञानिक उपलब्धि का प्रतीक है।

इसरो है भारत की शान, आर्यभट्ट से मंगलयान।  
स्वदेशी उपग्रह-स्वदेशी यान, आत्मनिर्भरता की पहचान।।  
शांतिपूर्ण अंतरिक्ष अनुसंधान, एक ध्येय है जन-कल्याण।  
जन-जन तक पहुँचे विज्ञान, सर्वांगीण नवभारत निर्माण।।







**अनुवाद: एक भावाभिषेक**  
**राधेश्याम यादव**  
 आरआरएससी, बेंगलुरु



जड़ जग का चेतन अनुवाद, जीवन का यह नाद।  
 मन-इंद्रिय भावानुभाव का, जगत क्रिया अनुवाद।।  
 मन को सुविचार में, विचार को सुकर्म में –  
 करते जतन से सुजन अनुवाद,  
 (जैसे) फूल का सुगंध रस आला अनुवाद  
 मूर्त का अमूर्त है निराला अनुवाद।।

सूरज' लगे 'तारा' का अधिकानुवाद,  
 'चांद 'बना' सूरज' का छाया अनुवाद  
 यही भाग का योग, कर्म का भोग  
 हिम का जल, आज का कल-  
 सृष्टि-चक्र अद्भुत रूपांतर अनुवाद।  
 जीवन नाद अनहद सहज अनुवाद।।

बिना सबद शिशु-मां का संवाद  
 कितना न्यारा-प्यारा आदर्श अनुवाद।  
 पर मन का मन-का भावानुवाद, हर वक्त कहां हो पाता,  
 कभी सबद कहीं खो जाता, कभी अरथ नहीं मिल पाता।  
 जीवन के अवसाद, हर्ष-विषाद का,  
 दर्द का अनुवाद कौन कर पाता!!

दृष्टि का दृश्य, विचार का मनुष्य हार की जीत, रार की प्रीत-  
 मान मूल एक ही लिप्यंतर अनुवाद,  
 अनहद नाद जीवन सहज अनुवाद,  
 फिर "सुकर" का "दुष्कर" क्यों लगता अनुवाद  
 चेतन है भाव, जड़ क्यों है अनुवाद??

कभी मन 'ए शोभा(a Shobha)'को, अशोभा पढ़ जाता,  
 कभी 'अर्जुन-कुंती' का, अनरथ अनुवाद,  
 'पांचाली'के भाग्य पाँच पति लिख जाता।  
 ऐसा व्यतिरेकी क्यों पापी अनुवाद ?  
 असंवेदन-वाद का संवेदन अनुवाद,  
 चेतन मन चेतन कर वाद अनुवाद।।

वाणी नव वरदे नव जीवन जग संवार दे  
 शब्दों को अरथ साकार विस्तार दे  
 वाद-अनुवाद कला सर्व गुण सार दे  
 "ढाई आखर" समता ममता दुलार दे।  
 सार-अनुवाद-वाद, प्रेम-अनुवाद  
 सत्यम शिवम सुंदरम करपरम अनुवाद,  
 चेतन मन चेतन कर वाद-अनुवाद।।



**रागिनी यादव**  
 (सुपुत्री, श्री राधेश्याम यादव)  
 आरआरएससी, बेंगलुरु

**राहुल यादव**  
 (सुपुत्र, श्री राधेश्याम यादव)  
 आरआरएससी, बेंगलुरु



## संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण / दौरे की मानक संचालन प्रक्रिया और अनुपालन

राम प्रकाश यादव,  
एनआरएससी, हैदराबाद



संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण/दौरे से पहले समिति सचिवालय की ओर कार्यालय ज्ञापन द्वारा संबंधित शहर के कई केंद्रीय संस्थानों को सूचित किया जाता है। जिसमें से किसी एक संस्थान को समन्वय की जिम्मेदारी दी जाती है। निरीक्षण प्रश्नावली की 03 प्रतियां हिंदी और अंग्रेजी में भरकर समिति सचिवालय में भेजनी होती है, जिसमें संस्थान की रिपोर्टों के साथ संबंधित विभाग की समीक्षा रिपोर्टें भी शामिल होती हैं। निरीक्षण प्रश्नावली से संबंधित विविध बिंदुओं पर आंकड़े प्राप्त करने के लिए संबंधित अनुभागों को तत्काल पत्र/मेल भेजकर यथाशीघ्र विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त करने की कोशिश करें।



पिछले 01 वर्ष की तिमाही प्रगति रिपोर्ट, वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट और मार्च महीने की तिमाही प्रगति रिपोर्ट के भाग-2 को ध्यान में रखते हुए आंकड़ा भरा जाए। निरीक्षण प्रश्नावली में उपरोक्त रिपोर्टों से मेल खाते आंकड़े (अधिकारी/कर्मचारी की संख्या, प्रशिक्षण की स्थिति और अधिकारी/कर्मचारी द्वारा हिंदी में कार्य का प्रतिशत, कंप्यूटरों की संख्या और हिंदी में कार्य का प्रतिशत आदि) के साथ कई सूक्ष्म प्रश्न होते हैं, जिसे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सलाह से आंकड़े भरा जाना चाहिए।

जिसमें पिछले निरीक्षण के दौरान दिए गए आश्वासनों पर कार्रवाई रिपोर्ट भी शामिल है। आंकड़े सही, सटीक और विश्वसनीय के साथ-साथ प्रामाणिक होना चाहिए। बढ़ाचढ़ा भरे गए आंकड़े से बचना चाहिए। कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान द्वारा मूल रूप हस्ताक्षरित निरीक्षण प्रश्नावली की तीन प्रतियां समिति सचिवालय को यथासमय भेजवाने की व्यवस्था करें।

समन्वय संस्थान से मिलकर अन्य प्रोटोकॉल के अनुसार निरीक्षण प्रश्नावली की अन्य प्रतियां (समिति के संभावित सदस्यों के अनुसार) के साथ राजभाषा कार्यान्वयन का संक्षिप्त विवरण, हिंदी में तैयार विभिन्न सामग्रियां (यथा-पम्फलेट, बैनर, पत्र-पत्रिकाएं, संस्थान के लेखकों द्वारा हिंदी में लिखी पुस्तकें, अन्य विशेष कार्य आदि), निरीक्षण में भाग लेने वाले अधिकारियों, संपर्क अधिकारी आदि की सूची समन्वय कार्यालय को भेजी जाए, जिससे समिति सचिवालय को अपेक्षित सूचनाएं मिलती रहे। संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण किए जाने वाले कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान द्वारा ध्यान देने योग्य बातों पर अमल किया जाए, जिसमें समिति के समक्ष प्रोटोकॉल (अंतिम समय में भाग-दौर से बचने के लिए अधिकारियों के बैठने के स्थान और नाम व पदनाम की बोर्ड पहले सुनिश्चित कर लें और इनकी सूचना समिति के सचिवालय और समन्वय कार्यालय को दिया जाए) का अनुपालन किया जाए। निरीक्षण से पहले स्थान विशेष का निरीक्षण कर फाइलों और प्रमाणों के रखने का स्थान सुनिश्चित कर लें।



निरीक्षण प्रश्नावली में भरे गए आंकड़े के अनुसार संभावित प्रश्नों का संक्षिप्त नोट बना लें और आपके कार्यालय के निरीक्षण से पहले अन्य कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान पूछे जाने वाले प्रश्नों को नोट करते रहें। निरीक्षण के दौरान प्रमाण प्रदर्शित करने हेतु पहले से फाइलों/रजिस्ट्रों/सेवा पुस्तिकाओं की प्रति/प्रमाणों आदि को निरीक्षण प्रश्नावली के अनुसार सुसज्जित कर लें। निरीक्षण से पहले समिति सचिवालय द्वारा प्रोटोकॉल की जानकारी दी जाएगी। निरीक्षण के दौरान पूछे गए प्रश्न का उत्तर वही अधिकारी दें, जिससे प्रश्न पूछा जाए। तुरंत आंकड़े की जानकारी हेतु कार्यालय प्रधान की सहायता करें, अथवा कार्यालय प्रधान की अनुमति से अन्य (राजभाषा) अधिकारी द्वारा उत्तर दिया जा सकता है। अक्सर नाकारात्मक के बजाय साकारात्मक उत्तर देने की कोशिश होनी चाहिए और माननीय सदस्यों की सलाह ध्यान से सुनकर नोट करते रहें।





निरीक्षण के बाद पहले से तैयार ध्यान देने योग्य बातें एवं प्रमाणपत्र कार्यालय प्रधान को प्रदान किए जाएंगे। कुछ दिनों बाद, उन्हीं ध्यान देने योग्य बातों से संबंधित आश्वासन प्राप्त होंगे, जिसकी कार्रवाई रिपोर्ट यथासमय भेजनी होती है। किसी कारणवश कार्रवाई रिपोर्ट यथासमय पूरी नहीं होने पर, आश्वासनों को पूरा करने की अवधि को 6-6 मास की दो किस्तों में बढ़ाया जा सकता है। अनुवर्ती कार्रवाई हेतु माननीय सदस्यों के प्रेक्षणों और आश्वासनों पर केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान बिंदुवार विस्तृत चर्चा कर आगे की पहल करनी चाहिए। निरीक्षण समिति को दिए गए आश्वासनों की जानकारी सभी कर्मचारियों को परिपत्र के माध्यम से देनी चाहिए। आश्वासनों के बारे में विभाग के उच्च अधिकारियों से बिंदुवार विशेष चर्चा कर उत्तर देना चाहिए। माननीय समिति को आश्वासनों पर अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट में हिंदी एवं अंग्रेजी के शब्दों पर विशेष ध्यान रखें और समय पर रिपोर्ट प्रेषित करने की कोशिश करें। अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट की भाषा स्पष्ट होनी चाहिए तथा प्रगति को दर्शाने हेतु तथ्यात्मक आंकड़े दिए जाने चाहिए।



**ऋचा त्रिवेदी**

(बहन, शिवम् त्रिवेदी)

आरआरएससी, बेंगलुरु





## क्या पिता के प्यार को हम शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं? “पिता”

शंभु सिंह टाक  
आरआरएससी, जोधपुर



एक अखबार वाला सुबह लगभग 5 बजे जिस समय अखबार देने आता था, उस वक्त मैं उसको अपने घर के बरामदे में टहलता हुआ मिल जाता था। अतः वह मेरे घर के मुख्य द्वार के सामने चलती साइकिल से निकलते हुए मेरे घर के बरामदे में अखबार फेंकता और मुझको “नमस्ते बाबू जी” कह कर अभिवादन करता हुआ तेजी से आगे की ओर बढ़ता चला जाता था।

जैसे-जैसे समय बीतने लगा और समय के साथ मेरी उम्र भी बढ़ने लगी, मेरे सोकर उठने का समय भी बदल गया। अब मेरे उठने का समय प्रातः 7 बजे हो गया था।

वक्त बीतता गया जब कई दिनों तक मैं उसको प्रातः टहलते हुए नहीं दिखा, तो एक रविवार को प्रातः लगभग 8:45 बजे वह मेरी कुशल-क्षेम पूछने मेरे घर पर आ गया। जब उसको ज्ञात हुआ कि घर में सब कुशल मंगल है और मैं बस यूँ ही देर से उठने लगा हूँ, तो वह बड़े सविनय भाव से हाथ जोड़ कर बोला, “बाबू जी! एक बात कहूँ?” मैंने कहा, “बोलो”

वह बोला, “आप सुबह तड़के सोकर उठने की अपनी इतनी अच्छी आदत को क्यों बदल रहे हैं। आपके लिए ही मैं जल्दी सुबह स्टेशन रोड़ से अखबार लेकर और फिर बहुत तेजी से साइकिल चला कर आप तक अपना पहला अखबार देने आता हूँ। आते समय यही सोचता हूँ कि कहीं मुझे देरी न हो जाए। आप अखबार के लिए प्रतीक्षा कर रहे होंगे।”

मैंने आश्चर्य से पूछा, “आप स्टेशन रोड़ से अखबार लेकर आते हैं? “हाँ सबसे पहला वितरण वही से प्रारंभ होता है।” उसने उत्तर दिया...

मैंने उससे फिर एक प्रश्न पूछा, “तो फिर तुम नींद से उठते कितने बजे हो?” “ढाई बजे, फिर साढ़े-तीन तक वहां पहुंच जाता हूँ।” फिर? मैंने पूछा... फिर लगभग सात बजे अखबार बांट कर घर वापस आकर सो जाता हूँ... फिर दस बजे कार्यालय ... अब बच्चों को बड़ा करने के लिए यह सब तो करना ही होता है।”

मैं कुछ पलों तक उसकी ओर देखता रह गया और फिर बोला, “ठीक है! मैं तुम्हारे बहुमूल्य सुझाव को ध्यान में रखूंगा।” उस घटना को लगभग सोलह वर्ष बीत गये।

एक दिन प्रातः नौ बजे के लगभग वह मेरे आवास पर आकर एक निमंत्रण-पत्र देते हुए बोला, “बाबू जी! बिटिया की शादी है... आप को सपरिवार आना है।”

जब निमंत्रण-पत्र को मैंने सरसरी नज़र से देखा, तो मुझे लगा कि वह किसी डाक्टर लड़की का किसी डाक्टर लड़के से परिणय का निमंत्रण है। तो जाने कैसे मेरे मुँह से निकल गया, “तुम्हारी बेटी?”

उसने भी जाने मेरे प्रश्न का क्या अर्थ निकाल लिया कि विस्मय के साथ बोला, “कैसी बात कर रहे है बाबू जी! मेरी ही बेटी है।” मैं अपने को सम्भालते हुए और अपनी झंप को मिटाते हुए बोला “मेरा तात्पर्य कि तुमने अपनी बेटी को डॉक्टर बनाया है। यह देख कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।” “हाँ बाबू जी। बेटी ने मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. किया है और उसका होने वाला पति भी वही से एम.डी. है... और बाबू जी। मेरा बेटा भी इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष की पढ़ाई कर रहा है।

मैं दरवाजे पर खड़ा होकर सोच ही रहा था कि उसे अंदर आकर बैठने को कहूँ, कि न कहूँ तभी वही मुझ से बोला “अच्छा बाबू जी। अब चलता हूँ... अभी और कई कार्ड बांटने हैं... आप सपरिवार आइएगा। आप सपरिवार आएंगे तो मेरे पूरे परिवार को बहुत अच्छा लगेगा।”

मैंने फिर सोचा आज तक, मैंने कभी उसे अंदर आने को नहीं कहा और अचानक आज अंदर बैठने को कहने का आग्रह मात्र एक दिखावा ही होगा। अतः औपचारिक नमस्ते कहकर मैंने उसे बाहर से ही विदाई दे दी। उस घटना के तीन वर्षों के बाद जब वह एक बार फिर मेरे आवास पर आया तो बातों-बातों में पता चला कि उसका बेटा जर्मनी में कहीं कार्यरत है।

आज उत्सुकतावश मैंने उससे प्रश्न पूछ ही डाला कि “आखिर उसने अपनी सीमित आय में रहकर अपने बच्चों को उच्च शिक्षा कैसे दे डाली।”



“बाबू जी! यह बहुत ही लंबी कहानी है लेकिन मैं आपको संक्षेप में बताने की कोशिश करता हूँ। अखबार, नौकरी के अतिरिक्त भी मैं खाली समय में कुछ न कुछ काम करता रहता था। रोजमर्रा का खर्च भी बहुत सोच समझकर करता था। मैं केवल शाम ढलने के बाद ही बाजार जाता और कद्दू, लोकी, बैंगन जैसी मौसमी सस्ती सब्जी को ही खरीदता था, क्योंकि दुकानें बंद होने के समय दुकानदार सब्जी सस्ते दाम में दे देता था।”

एक दिन मेरा बेटा पड़ोस के बच्चों के घर खेलने गया और वहां से आया तब उसका चेहरा उतरा हुआ था और आंखे नम थी। ऐसा लग रहा था कि मानो बहुत सारे सवाल पूछना चाहता है। शाम को खाने पर बैठे तब वह थाली में रखी रोटी सब्जी देखकर रोने लगा और माँ से बोला “यह क्या रोज बस वही कद्दू, लौकी, बैंगन जैसी नीरस सब्जी... रुखा-सूखा खाना... ऊब गया हूँ मैं। अपने मित्रों के घर जाता हूँ तो वहां मटर-पनीर कोफ्ते, आदि... और यहां बस एक ही तरह की सब्जी रोटी।”

मैंने बड़े प्यार से उसकी ओर देखा और फिर बोला “तुम पहले रोना बन्द करो, फिर हम इस बारे में बात करेंगे।”

फिर मैंने बोला “बेटा हमेशा अपनी थाली में ही देखो। अगर हमदूसरों की थाली में झाँकेगे तो जो हमारे पास है, हम उसका भी आनंद नहीं ले पाएंगे। वर्तमान में जो भी हमारे पास है, उसे दिल से स्वीकार करके, ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और हमेशा अपने भविष्य को सुधारने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। हमेशा अपने ऊपर विश्वास रखो कि तुम्हारे भविष्य को बदलने की ताकत केवल तुम्हारे पास ही है और किसी के पास नहीं।

मेरे बेटे ने अपने आंसुओं को पूँछा और फिर मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा जैसे कि वह मुझसे कहना चाह रहा हो कि मैं आपसे वादा करता हूँ कि आज से अपने जीवन की तुलना किसी से भी नहीं करूँगा और अपने भविष्य को बेहतर बनाने में अपने पूरी ताकत लगा दूँगा और उसके बाद से मेरे किसी भी बच्चे ने मुझसे किसी भी प्रकार की कोई भी मांग नहीं रखी। सीमित संसाधनों के साथ वे अपने जीवन को बेहतर बनाने में जुट गए। बाबू जी! आज का दिन बच्चों के उसी त्याग का परिणाम है।”

उसकी बातों को मैं तन्मयता के साथ चुपचाप सुनता रहा। एक पिता के प्रेम की ताकत को अपने हृदय की अंतरतम गहराई में महसूस कर पा रहा था।

**नैतिक शिक्षा:-** “हमारा भविष्य, हमारी नियति और हम इसे कितनी अच्छी तरह से निर्मित करते हैं, यह हम पर निर्भर करता है।”



**ग़ज़ल**  
ध्रुव कुमार झा,  
आरआरएससी, कोलकाता

(1)

है किसी का तन निरर्थक,  
तो किसी का धन निरर्थक ।  
अर्थ के संधान में ही,  
हो गया जीवन निरर्थक ।  
पुष्प सारे शुष्क हैं अब,  
हो गए उपवन निरर्थक ।  
क्षुब्ध होकर भेक बोला,  
मेघ का गर्जन निरर्थक ।  
मैं हुआ पाषाण जबसे,  
हो रहा सावन निरर्थक ।  
रोग में लगने लगे हैं,  
भोग के साधन निरर्थक ।  
मुक्त होकर लग रहा अब,  
थे सभी बंधन निरर्थक ।  
सोचता हूँ वृद्ध होकर,  
क्यों हुआ यौवन निरर्थक ।।

(2)

मेरी खातिर यही बहुत है  
तुम खुश हो, यह खुशी बहुत है  
गिला नहीं कुछ, गौर हुई हो  
किसी की हो तुम, वही बहुत है  
सूख गई है स्याही तो क्या  
अशक-लहू की, नमी बहुत है  
बाग के इन मगरूर गुलों से  
इक प्यारी सी, कली बहुत है  
बाकी गम बेकार हैं मेरे  
एक तुम्हारी, कमी बहुत है  
मीलों पसरे हर सागर से  
अधसूखी इक, नदी बहुत है  
हज़ार राहों का करना क्या  
इक तेरी ये, गली बहुत है  
खुश रहिए "नाकाम" हमेशा  
आप हैं ज़िन्दा, यही बहुत है”



## टैक्स क्या है

संतोष पोलोजु  
एनआरएससी, हैदराबाद



टैक्स शब्द लैटिन शब्द "टैक्सो" से आया है। टैक्स एक अनिवार्य शुल्क या वित्तीय शुल्क है जो सरकार द्वारा किसी व्यक्ति या संस्था पर राजस्व जुटाने के लिए लगाया जाता है। कर प्रायः धन के रूप में लगाया जाता है किन्तु यह धन के तुल्य श्रम के रूप में भी लगाया जा सकता है। एक तरफ इसे जनता पर बोझ के रूप में देखा जा सकता है वहीं इसे सरकार को चलाने के लिये आधारभूत आवश्यकता के रूप में भी समझा जा सकता है। आधुनिक सरकारों के लिए करधान, आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। लोकतंत्र में करधान ही सरकार की राजनीतिक गतिविधियों को स्वरूप प्रदान करता है। कर, करदाता द्वारा किया जाने वाला ऐसा अनिवार्य अंशदान है जो कि सामाजिक उद्देश्य जैसे आय व संपत्ति की असमानता को कम करके उच्च रोजगार स्तर प्राप्त करने तथा आर्थिक स्थिरता व वृद्धि प्राप्त करने में सहायक होता है।

### कर के प्रकार

कर दो तरह के हो सकते हैं - प्रत्यक्ष कर या अप्रत्यक्ष कर ।

**प्रत्यक्ष कर :** जैसा कि नाम से ही पता चलता है ये टैक्स करदाता (टैक्स देने वाला) द्वारा सीधे सरकार को दिया जाता है। भारत में इस प्रकार के टैक्स के सबसे अच्छे उदाहरण इनकम टैक्स और वैल्यू टैक्स हैं। सरकार की नज़र में, प्रत्यक्ष कर इनकम का कुल कर का अनुमान लगाना आसान होता है क्योंकि यह करदाताओं की आय से सीधा संबंध रखता है।

**अप्रत्यक्ष कर :** अप्रत्यक्ष कर या इन-डायरेक्ट टैक्स को अलग तरीके से जमा किया जाता है और ये टैक्स सामान और सेवाओं के उपयोग पर आधारित होते हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इन-डायरेक्ट टैक्स का भुगतान सामान/ सेवाओं के उपभोक्ता सीधे सरकार को नहीं करते हैं। सरकार सामान/ सेवा के विक्रेता(बेचने वाला) से इन-डायरेक्ट टैक्स प्राप्त करती है। विक्रेता, बदले में, सामान/ सेवा के खरीदार से टैक्स लेता है। इन-डायरेक्ट टैक्स के सामान्य उदाहरणों में सेल्स टैक्स, जीएसटी, वीएटी, आदि शामिल हैं।

**टैक्स भरने के लाभ :** मूलतः टैक्स वह राशि है जिस पर सरकार चलती है और अपने नागरिक को सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करती है। सरकार को बहुत सारे कार्य करने होते हैं और जिसके लिए धन की आवश्यकता होती है। हमारे धन का उपयोग सेनाओं, बुनियादी ढांचे के विकास, नागरिकों की सुरक्षा, प्रशासनिक सेवाओं आदि के लिए भी किया जाता है।

### इनकम टैक्स पर छूट

अगर आप पुरानी/नई टैक्स रेजिम में टैक्स फाइल कर रहे हैं तो आपको आयकर धारा 80सीसीडी (2) के तहत टियर 1 एनपीएस में किये गए निवेश पर टैक्स में छूट मिल सकती है, अधिकतम छूट आपकी बेसिक सैलरी और डीआरए के 10% तक ही होगी। वहीं पुरानी टैक्स रेजिम में आप ईएलएसएस, म्यूचुअल फंड, पीपीएफ, ईपीएफ, एफडी, पोस्ट ऑफिस सेविंग स्कीम, जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा और आदि में निवेश करने पर टैक्स में छूट का दावा कर सकते हैं। इनके बारे में इनकम टैक्स अधिनियम, 1961 की धारा 80सी और 80डी में बताया गया है।

### इनकम टैक्स स्लैब

सभी व्यक्तियों पर समान टैक्स लागू नहीं होता है, नियम के अनुसार आपकी आय जितनी अधिक है, आपको उतनी अधिक राशि का भुगतान करना होगा। यह सुनिश्चित करता है कि टैक्स की दरें और नियम एक समान होने के बजाय निष्पक्ष हों, सरकार आयकर स्लैब के उपयोग से टैक्स दर को निर्धारित करती है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति इनकम टैक्स का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी है। 60 वर्ष से कम आयु के भारतीय निवासियों के लिए वर्ष 2018-19 से टैक्स स्लैब दर निम्नलिखित है।

₹ 2.5 लाख से कम-टैक्स माफ़ , ₹ 2.5 लाख से ₹ 5 लाख -5%, ₹ 5 लाख से ₹ 7.5 लाख - 10% , ₹ 7.5 लाख से ₹ 10 लाख- 15%, ₹ 10 लाख से ₹ 12.5 लाख 20%, ₹ 12.5 लाख से ₹ 15 लाख- 25, ₹ 15 लाख से अधिक-30%।



## इनकम टैक्स रिटर्न

प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति के बाद, व्यक्तियों को चाहे वे नौकरीपेशा हों या स्व-नियोजित (अपना व्यवसाय करने वाला) हों, उन्हें अपना आयकर रिटर्न (ITR) जमा करना आवश्यक है। यह दस्तावेज़ विभिन्न स्रोतों से हुई करदाता की वार्षिक इनकम, निवेश/ खर्च, कुल टैक्स भुगतान, (TDS) एडवांस टैक्स का भुगतान और अन्य डाटा इस पर निर्भर करता है कि ITR दाखिल करने वाले व्यक्ति नौकरीपेशा है या अपना व्यवसाय करता है। ITR जमा करने के बाद, आयकर विभाग एक एक्नॉलेजमेंट नंबर जारी करता है और टैक्स अधिकारी रिफंड जारी करने से पहले ITR वैरीफाई करता है या व्यक्ति से कोई स्पष्टीकरण मांगता है।

## इनकम टैक्स रिफंड

यदि टैक्स देने वाले किसी व्यक्ति के नियोक्ता/ कम्पनी ने गलती से टैक्स प्रक्रिया में ज़्यादा TDS या ज़्यादा एडवांस टैक्स काट लिया है तो वह आयकर विभाग से आयकर रिफंड ले सकता है। हालाँकि, इस रिफंड का दावा केवल उस मामले में किया जा सकता है जब व्यक्ति ने ITR दाखिल किया हो।

## टैक्स चोरी कानून व जुर्माना

भारत सरकार ने टैक्स से संबंधित विभिन्न अधिनियम बनाए हैं और प्रत्येक नागरिक उन नियमों का पालन करने के लिए बाध्य है। टैक्स संबंधित विभिन्न अधिनियम का पालन ना करने पर लगाए गए कुछ दंड निम्नलिखित हैं:

धारा 140A (1) के अनुसार, यदि टैक्स देने वाले आंशिक रूप से या पूर्ण रूप से मूल राशि या ब्याज पर टैक्स का भुगतान करने में विफल रहता है, तो उसे डिफॉल्टर माना जाएगा।

धारा 221 (1) के अनुसार, टैक्स अधिकारी बकाया राशि के बराबर जुर्माना लगा सकता है।

धारा 271 (C) के तहत, यदि कोई टैक्स देने वाले आय को छुपाता है तो उसपर 100% से 300% का जुर्माना लगाया जा सकता है।

यदि कोई डिफॉल्टर धारा 142 (1) या 143 (2) के तहत, नोटिस का जवाब नहीं देता है, तो टैक्स अधिकारी उसको रिटर्न दाखिल करने या लिखित रूप में संपत्ति और लाइबिलिटी के सभी विवरण प्रस्तुत करने के लिए कह सकता है।

## इनकम टैक्स नोटिस

धारा 143(1): इसके तहत नोटिस तब आता है जब आपने ITR में कोई गलती की है या फिर गलत जानकारी दी है। पहले इस तरह के नोटिस डाक प्रणाली का उपयोग करके भेजे जाते थे, लेकिन काफी वर्षों से, यह बदल गया है और ई-फाइलिंग के साथ, इनकम टैक्स विभाग ईमेल भेजता है जिसमें आपको अपने ई-फाइलिंग खाते पर लॉग-इन कर नोटिस देखने के लिए कहा जाता है। इस तरह के नोटिस को कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए और निर्धारित तरीके से जवाब दिया जाना चाहिए। यदि विभाग को कई नोटिस भेजने के बाद आपसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती है, तो वे आपकी स्थिति की गंभीरता के आधार पर आपके खिलाफ आपराधिक कार्रवाई शुरू कर सकते हैं या आप पर जुर्माना लगा सकते हैं।







भू-केंद्र , शादनगर, हैदराबाद में स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण एवं राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते डॉ. प्रकश चौहान, निदेशक, एनआरएससी



एनआरएससी, बालानगर, में स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान ध्वजारोहण और सीआईएसएफ के सम्मान गार्ड का निरीक्षण करते हुए डॉ. वी.वी.राव, उप निदेशक, आरएसएए



जन-संपर्क सुविधा जीडिमेट्ला में स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण और कार्मिकों को संबोधित करते हुए डॉ. राजश्री विनोद बोथले, उप निदेशक, ईसीएसए





भुज-केंद्र, शादनगर, हैदराबाद में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित और कार्मिकों को संबोधित करते हुए डॉ. राजकुमार, तत्कालीन निदेशक, एनआरएससी



एनआरएससी, बालानगर, में गणतंत्र दिवस समारोह को संबोधित करते हुए श्री विनोद एम बोथले, तत्कालीन सह निदेशक, एनआरएससी



जन-संपर्क सुविधा जीडिमेदला में स्वतंत्रता दिवस समारोह अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को नमन करते हुए डॉ राजश्री विनोद बोथले, उप निदेशक, ईसीएसए

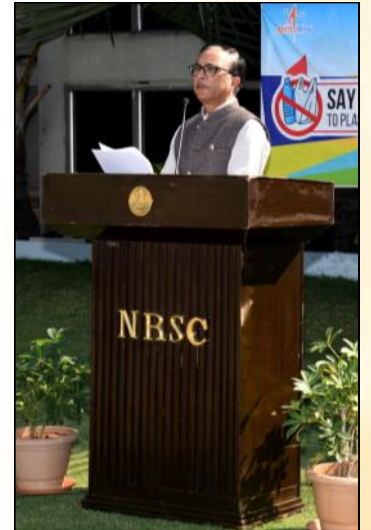




श्री एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो के पदभार ग्रहण करने बाद एनआरएससी, बालानगर का दौरा



श्री. एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो के कर कमलों से इसरो की 75 प्रमुख गतिविधियां-इसरो कॉफी टेबल बुक (हिंदी एवं अंग्रेजी) का विमोचन एवं इस अवसर पर पदाधिकारियों को संबोधन



स्वच्छता प्रतिज्ञा दिलाते हुए डॉ. राज कुमार, तत्कालीन निदेशक एनआरएससी





श्री. एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो का एनआरएससी, शादनगर दौरा



डॉ. राज कुमार, तत्कालीन निदेशक, एनआरएससी द्वारा इंडोर गेम्स का उद्घाटन



डॉ. प्रकाश चौहान द्वारा निदेशक, एनआरएससी का पदभार ग्रहण के दौरान तत्कालीन निदेशक एवं नियंत्रक द्वारा स्वागत



पदभार ग्रहण करने के बाद डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक, एनआरएससी द्वारा शादनगर का दौरा





श्रीमती संध्या वेणुगोपाल, अपर सचिव का एनआरएससी दौरा



एनआरएससी में इंजीनियर दिवस का आयोजन



अंबेडकर जयंती समारोह आयोजन के दौरान विशिष्ट प्रवक्ता द्वारा अभिभाषण एवं निदेशक, एनआरएससी द्वारा सम्मान





सहस्रवर्षीय उत्सव

प्रयोक्ता संपर्क बैठक - 2022



राजभाषा समारोह के दौरान संवाद - सामान्य अंक एवं प्रयोक्ता संपर्क बैठक के दौरान संवाद-तकनीकी अंक का विमोचन



एनआरएससी की तकनीकी समाचार पत्रिका पिक्सेल 2पीपुल (द्विभाषी) अंक 1 एवं 2 का विमोचन



नव वर्ष के अवसर पर एनआरएससी कैलेंडर (द्विभाषी) का विमोचन





संसदीय राजभाषा समिति के तत्कालीन संयोजक, माननीय श्री प्रदीप टम्टा एवं निदेशक, एनआरएससी द्वारा बातचीत एवं समिति के समक्ष उपस्थित अन्य अधिकारीगण



17 जून 2022 को संसदीय राजभाषा की दूसरी उप समिति के प्रश्नों के उत्तर देते हुए डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक, एनआरएससी एवं अन्य पदाधिकारी गण



सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह का आयोजन





अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह के समय हैदराबाद की महापौर श्रीमती गडवाल विजय लक्ष्मी के साथ समूह तस्वीर लेते हुए कर्मचारीगण



एनआरएससी ने "एक्विफर सस्टेनेबिलिटी एंड मैनेजमेंट सिस्टम" नामक परियोजना के लिए अमृत 2.0 मिशन के तहत आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



जलवायु विज्ञान के लिए राष्ट्रीय सूचना प्रणाली (एनआईसीईएस) कार्यक्रम के तहत "जलवायु और पर्यावरण अध्ययन के लिए अंतरिक्ष आधारित सूचना समर्थन" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन 18 जुलाई 2022 को नई दिल्ली में श्री एस सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो / सचिव अंतरिक्ष विभाग द्वारा किया गया।





विश्व हिंदी दिवस समारोह के दौरान जन संपर्क गतिविधियां



हिंदी दिवस समारोह के दौरान जन संपर्क गतिविधियों के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय पिकेट के छात्रों को पुरस्कार वितरण



राजभाषा समापन समारोह के दौरान कार्मिकों, परिवार के सदस्यों एवं बच्चों को पुरस्कार





अंतरिक्ष कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए युवा विज्ञानी कार्यक्रम (युविका) के तहत देश के विभिन्न राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के मेधावी छात्रों को मिलीजुली भाषा में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस संदर्भ में डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक, एनआरएससी ने छात्रों को संबोधित किया।



सुरक्षा सप्ताह एवं राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन



## क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पश्चिम (जोधपुर) की विविध गतिविधियां...

महत्त्वपूर्ण घटनाएं



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, पश्चिम में स्वतंत्रता दिवस / गणतंत्र दिवस समारोह



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, पश्चिम में राजभाषा समारोह



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, पश्चिम में विश्व हिंदी दिवस समारोह



स्वच्छता पखवाड़ा



सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2021



## क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण (बेंगलूरु) की विविध गतिविधियां...

सहस्रपूर्ण  
सटकार



क्षे.सु.सं.कें.-दक्षिण में स्वतंत्रता दिवस समारोह-2022 की झलकियां



दिनांक 22-24 जून 2022 को समानव उड़ान केंद्र, बेंगलूरु द्वारा आयोजित राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम के दौरान कवि सम्मेलन में क्षे.कें.-द. के श्री राधेश्याम यादव, कनि. अनुवाद अधिकारी ने सर्वोत्कृष्ट कविता प्रस्तुति के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

सी.एस.आई.आर. (एन.ए.एल., बेंगलूरु) द्वारा आयोजित 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय हिंदी वेबिनार-2022' में क्षे.कें.-द. की वैज्ञानिक श्रीमती शिवम् त्रिवेदी ने 'उपग्रह सुदूर संवेदन द्वारा विभिन्न वनस्पति प्रकारों का अध्ययन एवं अनुप्रयोग' विषय पर सर्वोत्कृष्ट पत्र प्रस्तुति का पुरस्कार प्राप्त किया।



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण, बेंगलूरु - आजादी का अमृत महोत्सव



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - दक्षिण में पौधारोपण एवं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2022 की झलकियां



## क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पूर्व (कोलकाता) की विविध गतिविधियां



स्वतंत्रता दिवस, 2022 के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए उप महाप्रबंधक



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पूर्व, कोलकाता में स्वतंत्रता दिवस, 2022 का आयोजन



अगस्त 2022 में दक्षिण कोलकाता में आयोजित प्रदर्शनी में इसरो की तरफ से क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पूर्व, कोलकाता की सहभागिता



8 मार्च 2022 को क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पूर्व, कोलकाता में विश्व महिला दिवस समारोह का आयोजन



## क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-मध्य (नागपुर) की विविध गतिविधियां

महत्त्वपूर्ण घटनाएं



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन, नागपुर में गणतंत्र/स्वतंत्रता दिवस समारोह



विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय अभियांत्रिकी संस्थान, नागपुर में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री नीतिन गडकरी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी का मुआयना



आरआरएससी-सी परिसर में स्वच्छता पखवाड़ा



आरआरएससी-सी परिसर में झोन का प्रदर्शन



## क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-उत्तर (दिल्ली) की विविध गतिविधियां...



इसरो एकीकृत परिसर, नई दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस 2022 का समारोह मनाते हुए



क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र- उत्तर के कर्मचारियों को डॉ सुशील कुमार श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, (क्षे. कें) द्वारा आतंकवाद विरोधी दिवस की शपथ दिलाते हुए



इसरो एकीकृत परिसर, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 का समारोह मनाते हुए



इसरो एकीकृत केंद्र परिसर, नई दिल्ली, में डॉ. बी. आर. अंबेडकर जयंती 2022 का समारोह मनाते हुए





## शिक्षा और मानव विकास

अंकुश मित्रा,

एनआरएससी, हैदराबाद



शिक्षा के महत्व को समझाते हुए एरिस्टोटल ने एक बार कहा था, "दिल को शिक्षित किए बिना मन को शिक्षित करना कोई शिक्षा नहीं है।"

आज के बच्चे कल के राष्ट्र का निर्माण करेंगे। एक राष्ट्र के भाग्य का फैसला एक स्कूल की कक्षा से किया जाएगा क्योंकि भारत जनसांख्यिकीय लाभांश के चरण में है। इसलिए इसका वास्तविक लाभ उठाना बहुत आवश्यक है। सरकार के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह इस आबादी को ऐसे धन के रूप देखे, जो मानव पूंजी और दक्षता के उच्चतम स्तर की विशेषता हो। इस बदलाव लाने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। लेकिन इन सब में, सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा होनी चाहिए। शिक्षा मानव विकास की कुंजी है जो उच्चतम स्तर के ज्ञान के साथ कार्यात्मक कल्याण की स्थिति के अलावा और कुछ नहीं है।

माना जाता है कि शिक्षा समृद्धि लाती है। लेकिन, यह हमेशा सच नहीं रहा है। हमने पढ़े-लिखे लोगों को कपटपूर्ण गतिविधियाँ करते और दूसरे देशों में भागते देखा है। कभी-कभी ये तथाकथित पढ़े-लिखे लोग देश के संकट की घड़ी में भी आगे नहीं आते। किसी ने एक बार सही कहा था कि आज के समाज की समस्या यह है कि हमारे पास मिसाइलों के लिए गाइड हैं, लेकिन मानव विकास के लिए कोई मार्गदर्शक नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य किसी व्यक्ति के जीवन में एक ऐसे 'रूप' का परिचय देना, जो बढ़ावा देने और संरक्षित करने में सक्षम हो। शिक्षा के महत्व को समझाते हुए, नेल्सन मंडेला ने कहा था, "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।" समग्र मानव विकास के लिए शिक्षा को समग्र बनाना इसलिए आवश्यक है।

अगर देखा जाए तो शिक्षा का मानव विकास से गहरा संबंध है। व्यक्तिगत स्तर पर शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व और चरित्र के विकास में भी मदद करता है, जबकि सामाजिक स्तर पर सद्भाव, शांति और समृद्धि को बढ़ावा देती है। व्यक्ति की सामाजिक स्वीकार्यता को बढ़ाती है शिक्षा। अगर शिक्षा और मानव विकास के आर्थिक आयामों की बात करें तो शिक्षा गरीबी और बेरोजगारी से लड़ने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। एक सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, 40% श्रमिक कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं करते हैं। नौकरी पोर्टफोलियो बनाने और उत्पादकता स्तर को बढ़ाने के लिए शिक्षा सर्वोपरि है। बढ़ी हुई मांगों को जोड़कर और आर्थिक क्षमता में वृद्धि करके मानव पूंजी में वास्तविक क्षमता को अनलॉक किया जा सकता है। शिक्षा, व्यक्तियों के बीच सामाजिक एकीकरण को भी बढ़ावा देती है। उग्रवाद और क्षेत्रवाद की घटनाएं तब अधिक होती हैं जब लोग अनपढ़ होते हैं और मुख्यधारा से अलग हो जाते हैं। इस प्रकार देश की अखंडता, संप्रभुता और एकता को बनाए रखने के लिए शिक्षा को सभी स्तरों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

वर्तमान में हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ चुनौतियाँ हैं जैसे कि, शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यावहारिक और व्यावसायिक पहलुओं को रखने के बजाय परीक्षा उत्तीर्ण करने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। घटती नैतिक शिक्षा नवोदित बच्चों के मन में अधिक प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवाद को बढ़ावा दे रही है। यदि हम समाधान के बारे में सोचते हैं, तो नैतिक शिक्षा परिवार से शुरू होनी चाहिए। माता-पिता, शिक्षकों, स्कूल और समाज का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे बच्चों को इस तरह से समग्र शिक्षा प्रदान करें कि वे अपनी वास्तविक क्षमता का एहसास कर सकें, ताकि वे सच्चे मानव विकास को खोल सकें एवं राष्ट्र, समाज और खुद के लिए एक एसेट बन सकें। इस प्रकार शिक्षा कल के आदर्श राष्ट्र के निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त करेगी।





## जीवन की रफ्तार...

तेज सिंह

आरआरएससी, जोधपुर



तेरी बुराईयों को हर अखबार कहता है,  
 और तू मेरे गाँव को गंवार कहता है,  
 ऐ शहर मुझे तेरी औकात पता है,  
 तू चुल्हू भर पानी को वाटर पार्क कहता है,  
 थक गया है हर शख्स काम करते-करते,  
 तू इसे अमीरी का बाजार कहता है,  
 गाँव चलो वक्त ही वक्त है सबके पास,  
 तेरी सारी फुर्सत को तेरा ऐतबार कहता है,  
 मौन होकर सारे रिश्ते निभाये जा रहे हैं,  
 तू इस मशीनरी दौर को परिवार कहता है,  
 जिनकी सेवा में खपा देते थे जीवन सार,  
 तू उस मां-बाप को अब भार कहता है,  
 वो मिलने आते थे तो कलेजा साथ लाते थे,  
 तू दस्तूर निभाने को रिश्तेदार कहता है,  
 बड़े-बड़े मसले हल करती थी पंचायतें,  
 ऐसी दलीलों को तू दरबार कहता है,  
 बैठ जाते थे सब अपने पराये बैलगाड़ी में,  
 अब पूरा परिवार भी बैठ ना पाये तू जिसे कार कहता है,  
 अब बच्चे भी बड़ों का आदर भूल गये हैं,  
 तू इसे नये दौर का संस्कार कहता है...

### अनुभव...

जिंदगी दो दिन की है, एक दिन आप के हक में,  
 एक दिन आप के खिलाफ,  
 जिस दिन हक में हो, गुरुर मत करो,  
 जिस दिन खिलाफ हो, थोड़ा सा सब्र जरूर करो।



## भारत

निवेदिता सिन्हा

आरआरएससी, कोलकाता

भारत मेरा प्यारा देश ।  
 सब देशों से न्यारा देश ।  
 नदियों में बहती इसकी अमृत धार,  
 मिट्टी से मिले हमें माँ सा प्यार ।  
 सर पे हिमालय का है ताज,  
 पैरो में समंदर का एहसास ।  
 शूरवीरों की ये धरती,  
 अनोखा है इसका इतिहास ।  
 इसके तिरंगे की खातिर,  
 वीर करते जीवन कुर्बान है ।  
 अनेकता में भी जहाँ मिले एकता ,  
 वह भारत देश महान है ।  
 इस मिट्टी में जन्म लिया है,  
 यह सौभाग्य हमारा है ।  
 जीवन इसपर करे अर्पण,  
 ये कर्तव्य हमारा है ।  
 भारत मेरा प्यारा देश ।  
 सब देशों से न्यारा देश ॥







## हिमालय यात्रा

नरेन्द्र सिंह रावत

एनआरएससी, हैदराबाद



यात्रा शब्द सुनकर मन उमंगों से भर जाता है, मन खयालों में डूब जाता है, परन्तु यात्रा का अर्थ यही तक सीमित नहीं है। फिर क्या मतलब है यात्राओं का और हम यात्राएं क्यों करें? इस बात पर किसी महान व्यक्ति ने कहा है कि - " यात्राएं हमें इस अर्थ में बड़ा बनाती हैं कि वो हमें हमारे छोटे होने का अनुभव कराती हैं ।"

मेरी यात्रा की शुरूआत होती है रक्षा मंत्रालय की एक यूनिट 'आर्डिनेंस फैक्ट्री देहरादून' से, यहां से साहसिक खेलों के अन्तर्गत हर वर्ष एक दल ट्रेकिंग के लिए उच्च हिमालयी क्षेत्रों को रवाना किया जाता है। इस वर्ष जाने वाले दल का मैं एक नया सदस्य हूं। कई दिनों के परामर्श के बाद आज 09 सितम्बर को हमारी सात सदस्यों की टीम 15 दिनों के ट्रेकिंग अभियान के लिए गढ़वाल हिमालय (उत्तराखण्ड) में, 5250 मी. की ऊंचाई पर स्थित 'बुरांसू पास' के लिए रवाना होती है। इससे पहले मैं कुछ छोटी यात्राएं कर चुका हूं, परन्तु इस तरह की लम्बी यात्रा के लिए मैं काफी उत्सुक हूं। सुबह 5 बजे हम बस से देहरादून से रवाना होते हैं, सारे दिन खूबसूरत पहाड़ों से गुजरते हुए देर शाम को सांकरी में हमारे बस का सफर समाप्त होता है। आज की रात हम यहीं पर होटल में ठहरेंगे और कल सुबह आगे की यात्रा 10 कि.मी. जीप से होगी और फिर शुरू होगी हमारी पैदल यात्रा। जीप का सफर काफी भयानक था-ऊंची पहाड़ियों के बीच से होती हुई तंग एवं कच्ची सड़क और नीचे गहरी खाई। करीब 2 बज चुके हैं और हमारा पैदल ट्रेक पूरे जोश के साथ शुरू हो चुका है। हरे-भरे जंगल और कल-कल करती नदियों के बीच से गुजरते हुए थकान बिल्कुल भी महसूस नहीं हो रही है। जबकि, हम करीब 25 किलो का वजन पीठ पर लेकर चढ़ाई कर रहे हैं। देर शाम हो चुकी है और 'तौंस' नदी के किनारे चलते हुए ठंडी हवा पसीने को सुखा कर आनंद की अनुभूति दे रही है। धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा है और हम बढ़े जा रहे हैं। अचानक सामने टार्च की रौशनी से कुछ आंखे चमक रही हैं। यहां पर बहुत सारी भेड़-बकरियां हैं। ये सारे दिन जंगल में चरने के बाद रात को खुले आसमान के नीचे सोती हैं और इनकी सुरक्षा में पहरा देते हैं दो दमदार कुत्ते, जो हिम्मत रखते हैं बाघ के साथ मुकाबला करने का। हमारा पड़ाव अभी दूर है, हम अपने तय समय से देरी से चल रहे हैं, सायंकाल तक हमें 'ओसला' गांव तक पहुंचना था, ताकि हम समय रहते रात को ठहरने का प्रबन्ध कर सकें। इस मार्ग में आखिरी गांव 'ओसला' है और उससे पहले इस बीच में दूर तक कोई गांव नहीं है। देर रात करीब 10 बज चुके हैं। यह समय शहरों में सामान्य है, परन्तु पहाड़ों में अब तक सन्नाटा छा जाता है। किसी तरह हमने यहां पर ठहरने का प्रबंध कर लिया है। दरअसल, यहां पर एक पारंपरिक मेला चल रहा है। इसलिए लोग अभी तक जागे हुए हैं। पहाड़ी गांवों की यह एक खूबसूरती है कि 'अतिथि देवो भवः' का प्रत्यक्ष उदाहरण आपको यहां पर देखने को मिलता है। देर रात होने के बावजूद भी हमें गर्मा-गरम खाना नसीब हो गया है, भूख काफी लगी हुई है और शरीर थकान से पस्त है। कुछ ग्रामीण हमें मेले में सम्मिलित होने का आग्रह कर रहे हैं, परन्तु थकान से हमारी हालत पस्त है और अब गहरी नींद में सोने का वक्त है।



आज पहले दिन तालुका से ओसला गांव तक का ट्रेक 14 किमी. का था। सुबह के 8 बजे तक हम सब उठ गये हैं, काफी खूबसूरत नजारा है, पास में एक झरने के पास हमने ब्रश इत्यादि कर, आग में सिकी हुई मडुवे (उच्च हिमालयी क्षेत्रों में उगने वाला अनाज) की रोटी और साग (स्थानीय हरी सब्जी) छाछ इत्यादि का नास्ता करके हम अब तैयार हैं। आज की यात्रा के लिए। यह आखिरी गांव है, यहां से चार युवक पोर्टर के रूप में हमारी टीम में शामिल हो गये हैं। ये लोग टैंट और किचन सामग्री ले जाने में हमारी मदद करेंगे। आज हम करीब 11 किमी. का ट्रेक कर 'हर की दून' तक पहुंचेंगे। तरह-तरह के फूलों एवं हरी-भरी झाड़ियों से भरी यह मनमोहक घाटी मन को शान्ति और सुकून दे रही है। कुछ ग्रामीण खेतों में काम कर रहे हैं। ज्वार, बाजरा, चौलाई और राजमा इत्यादि की खेती यहां के लोग करते हैं। आगे का रास्ता ऊंची पहाड़ियों की ढाल पर बिछी मखमली घास के बीच से होकर गुजरता है। इन ढालदार हिमालयी घास के मैदानों को 'बुग्याल' कहा जाता है जो





कि सर्दियों के मौसम में चार महीने तक बर्फ से ढके रहते हैं और बर्फ पिघलने के बाद मखमली घास से ढक जाते हैं। यहां पर विविध प्रकार के रंग-बिरंगे फूल, औषधियां एवं जड़ी-बूटियां पायी जाती हैं। आस-पास के क्षेत्रों के चरवाहा लोग सर्दी का मौसम गुजरते ही इस क्षेत्र में आ जाते हैं और साल के बांकी के महीनों में यहां पर अपनी भेड़-बकरियों को चराते हैं। ये लोग एक साहसिक एवं एकांतमय जीवन व्यतीत करते हैं। दोपहर का समय है, धूप एकदम सिर के ऊपर है। शरीर पसीने से तर है, मन्द-मन्द सरकती ठण्डी हवा से थकान महसूस नहीं हो रही है। ऊंचे-नीचे और घुमावदार रास्तों के बीच कहीं पर छोटे-बड़े पानी के श्रोत, तो कहीं पर कल-कल करते झरने इस शान्त

वातावरण में एक संगीत बिखेर रहे हैं। सायंकाल 5 बजे करीब हम 'हर की दून' पहुंच गये हैं। ऊंचे देवदार के पेड़ों के बीच से कल-कल बहती नदियों की जल धार, हरी-मखमली घास से ढकी पहाड़ियों से घिरी यह घाटी बेहद खूबसूरत है तथा 'वैली ऑफ लार्ड शिवा' के नाम से जानी जाती है। समुद्र तल से 11700 फीट की ऊंचाई पर 'रूपीन' और 'सुपीन' नदियों के संगम पर स्थित इस स्थान पर एक बड़े पत्थर पर शिव-लिंग स्थापित किया गया है। द्रोपदी का डांडा, ब्लैक पीक, बंदरपूछ, रूईंसारा-ताल, ज्यूनधार ग्लेशियर और स्वर्गारोहिणी जैसी ऊंची पर्वत चोटियों का मार्ग यहीं से शुरू होता है और बुरांसू-पास होते हुए एक मार्ग इस घाटी को 'बसपा वैली' हिमांचल प्रदेश से जोड़ता है। इसी मार्ग से हम आगे बढ़ेंगे। आज का पड़ाव हमारा यही पर होगा। आज पहली कैंपिंग है और यात्रा के बांकी आगे के दिनों में अब रात टेंट लगाकर ही गुजारनी होगी। इस क्षेत्र में हिरन और भालू खूब पाए जाते हैं, वैसे कोई खास खतरा नहीं है, हां भालू कभी-कभार खाने की गंध सूंघकर आपके करीब आ सकता है। परन्तु अब वक्त आ चुका है खुद को प्रकृति को समर्पित कर देने का। हर कदम आपके लिए घातक हो सकता है, यदि आप अर्न्तमन से इसके रंगों में समा नहीं जाते। प्रकृति जीवनदायी है, हमारी मां की तरह और यह अपनी गोद में तभी खेलने देती है जब हम एक बच्चे की तरह इसके रंगों में खो जायें।

रात होने से पहले हमने टेंट लगा लिया और रात्रि भोजन करके गहरी नींद में सो गये। चिड़ियों की चह-चहाहट के साथ एक नई सुबह की शुरूआत हो गई है अपने दैनिक क्रिया-कलाप करने के बाद थोड़ा व्यायाम कर हमने गर्मा-गरम नास्ता किया और टेंट इत्यादि सामान बांध कर करीब 8 बजे हमने आगे की यात्रा आरम्भ कर दी है। लगभग 4 कि.मी. की चढ़ाई चढ़ने के बाद, हम पहुंच चुके हैं 'रूईंसारा ताल' बेहद खूबसूरत रंग-बिरंगे फूलों और घास के मैदान के बीच शान्त नीली झील, इस अलौकिक दृश्य ने मन को भी शान्त कर दिया और सारी थकान मिटा दी। दोपहर के करीब 2 बज गये हैं, हरे-भरे घास के बीच से होते हुए हम आगे बढ़ते जा रहे हैं। ट्रेकिंग के दौरान हम दोपहर का खाना नहीं खाते हैं, क्योंकि सारे दिन चलते ही रहना होता है। इसलिए हम कोशिश करते हैं कि संध्या होने से पूर्व अगले पड़ाव तक पहुंच जाएं और रात होने से पहले अपना तंबू गाड़ लें। आज हम 'राताढो' में अपना कैंप लगाएंगे-एक तरफ हिमालय और दोनों तरफ ऊंची पहाड़ियों से घिरी हुई यह जगह एक हिमालयी मैदान है। सामने ग्लेशियर से आने वाली नदियों की जलधार यहां आकर ऐसे बिखर जाती है







मानो कोई जाल बिछा हो। इन्हीं जलधाराओं के बीच में एक समतल जगह देखकर हमने अपना टेंट गाड़ दिया है। रात का खाना खाने के बाद हम अपने-अपने स्लीपिंग बैग में घुस गये, परन्तु ऐसे उच्च हिमालयी क्षेत्र में ठीक से नींद नहीं आ पाती है। थोड़े समय अन्तराल में नींद खुलती रहती है। चम-चमाती सुनहरी धूप के साथ 'राताढो' में दिन की शुरुआत हो चुकी है। थोड़ा व्यायाम करने के बाद हमने गर्मा-गरम नास्ता किया और टेंट बांध कर अब निकल पड़े हैं। आज के ट्रैक पर जोकि होने वाला है पूरे पथरीले ग्लेशियर और छोटी-छोटी जल धाराओं से होकर। छोटी-बड़ी बर्फाली घाटियों से होकर लगभग 3 बजे हम पहुंच गये हैं बेस कैम्प तक, यहां पर जगह-जगह छोटे

तालाब बने हुए हैं और उनमें बर्फ की सिल्लियां भी तैर रही हैं। छोटी-छोटी फूलों की झाड़ियों में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। चारों तरफ ऊंची पर्वत चोटियों से घिरे इस स्थान पर अनन्त शान्ति की अनुभूति हो रही है। मन ही मन में एक खयाल आ रहा है कि काश मेरी जिन्दगी के जब आंखिरी क्षण बचे हों तो मैं इन्हीं पलों को एहसास कर सकूँ। खैर, थोड़ी सी समतल जगह देखकर हमने अपना टेंट गाड़ दिया है और अब तैयारी है खाना पकाने की। हम रात होने से पहले खाना पका लेंगे और खाने के बाद हम आराम करेंगे। ठीक 12 बजे रात्रि से हम अपना सामान बांधना शुरू करेंगे और निकल पड़ेंगे अपने लक्ष्य की तरफ। सूरज की पहली किरण के साथ हम होंगे 'बुरांसू पास' पर। धूप निकलने के बाद बर्फाली चट्टान गीली होने लगती हैं और चढने में कठिनाई बढ़ जाती है। सारे दिन हम दूसरी तरफ के ग्लेशियर से उतरेंगे, उस तरफ हमें ग्लेशियर में टेंट लगाने की जगह नहीं मिलेगी। इसलिए सारे दिन चलकर पूरा ग्लेशियर पार करने के बाद ही रात्रि विश्राम के लिए जगह देखनी होगी। फिलहाल, रात्रि के 2 बजे हैं और हम सामान बांधकर निकल चुके हैं। थोड़ा आराम जरूर किया पर नींद नहीं ले पाए। क्योंकि आक्सीजन की कमी और ठंड से सिर दर्द करने लगता है और सारी रात ग्लेशियर के टूटने की आवाजें आती रहती हैं। अभी एकदम सीधी चढाई है, तापमान माइनस में है, पाला गिरने से हम पूरे सफेद हो गये हैं और हमें रुक-रुक कर शान्ति के साथ आगे बढ़ते रहना है।

कहा जाता है कि हिमालय चढते हुए यदि आप आवाजे निकालते हैं, शोरगुल करते हैं तो धीरे-धीरे बादल घिरने लगते हैं और फिर धुंध से कुछ भी दिखाई देना मुश्किल हो जाता है। अब भी बर्फ की चट्टाने टूटने की आवाजें आ रही हैं और सूर्योदय होने में अभी वक्त है, हम चोटी के एकदम करीब पहुंच गये हैं, परन्तु अभी एक बड़ी मुसीबत सामने आ गई है-आगे

एकदम खड़ी पथरीली चट्टान है, जोकि अन्दर से पूरा बर्फ है और पैर पड़ते ही ये पत्थर सरकने लगते हैं। काफी खतरनाक था, रस्से के सहारे से हमने किसी तरह यह मुसीबत पार की। हमारा एक साथी फिसलकर ढाल में कुछ दूरी तक जा गिरा था, मुश्किल से उसने किसी तरह खुद को सरकने से रोका, तब तक हम दो साथियों ने आइसएक्स की मदद से उठाकर बचा लिया। अब हम पीक पर पहुंच चुके हैं और चम-चमाती धूप भी खिल चुकी है। तिरंगा लहरा कर हम एक दूसरे के गले मिले और खुशी जाहिर की। अभी दूसरी तरफ का ग्लेशियर उतरना बाकी है। जैसे-जैसे धूप बढ़ती जाएगी, बर्फ पिघलने लगेगी और हमारे लिए मुसीबत बढ़ती जाएगी। अब हम उत्तराखण्ड की सीमा पार कर हिमांचल-प्रदेश में आ चुके हैं। 'बुरांसू पास' तिब्बत बोर्डर से कुछ ही किमी. की दूरी पर है। इसका पूर्वी भाग 'टौंस वैली' की तरफ और उत्तर-पश्चिमी भाग 'बसपा वैली' से जुड़ा है और यहीं से शुरू होता है 'झुकिया' ग्लेशियर। जहां तक नजर पड़ सकती है, बस सफेद बर्फाली चट्टानें ही नजर आ रही हैं। सारे दिन चलने के बाद देर सायंकाल हम ग्लेशियर के एक किनारे तक आ गए हैं। यहां पर छोटी नदी की जलधारा है और टेंट लगाने की जगह भी है।







पूरा शरीर थकान से टूट चुका है, किसी तरह टेंट गाड़ कर हमने मिलकर रात का खाना पकाया और खाकर गहरी नींद में सो गये। आज की सुबह हम देर से उठे हैं। अब भी थकावट महसूस हो रही है। कुछ लोग खाना पका रहे हैं और कुछ अपने कपड़े धो रहे हैं। खाने के बाद आज का सफर शुरू हुआ-अब भी एक पड़ाव और रूकने के बाद हम अगले दिन के ट्रैक के बाद इस घाटी के आखिरी गांव छिटकुल पहुंच पाएंगे। देर शाम तक चलने के बाद हम बसपा नदी के किनारे तक पहुंच गए हैं। नदी के उस पार बार्डर रोड दिखाई दे रही है। यह क्षेत्र आटीबीपी की सुरक्षा में रहता है। यहां पर हमें एक दुर्लभ

हिमालयी वृक्ष 'भोज-वृक्ष' की प्रजाति देखने को मिली। यह पवित्र माना जाता है और प्राचीन काल में इसकी परतदार छाल को संदेश भेजने के लिए कागज की तरह प्रयोग किया जाता था। हमने आसपास कुछ सूखी लकड़ियां बीनकर आग का प्रबन्ध किया और उसपर ही खाना पकाया, जो काफी अधिक स्वादिष्ट था। यह हमारे इस यात्रा की आखिरी कैंपिंग थी, सुबह होते ही हम निकल पड़े हैं -आज कई दिनों के बाद हम इंसानी बस्ती में प्रवेश करेंगे। 'बसपा' नदी के पार रोड पर पहुंचते ही हमें किस्मत से आईटीबीपी का एक ट्रक मिल गया, उन्होंने हमें 10 कि. मी. आगे छिटकुल के करीब छोड़ दिया। छिटकुल 'बसपा वैली' का बेहद खूबसूरत कस्बा है। देश-विदेश से पर्यटक यहां घूमने आते हैं। यहां से हमने हिमाचल परिवहन की बस पकड़ी और चल पड़े हैं सांगला के लिए। सांगला में हमने एक रात बिताई और पूरी टीम के साथ जश्र मनाया। कई दिनों के बाद सब ने अपना मन पसंद भोजन किया। अगली सुबह हमने नम आंखों से अपनी टीम में पोर्टर के रूप में शामिल चार साथियों को उनके घर के लिए विदा किया। इतने दिनों तक एक वीरान जगह पर साथ में रहने से एक अच्छा आपसी सम्बन्ध बन जाता है और हमेशा के लिए दिल में रह जाती हैं बस यादें। हमने भी 'रिकांगपियो' के लिए अपनी बस पकड़ ली। यहां पर एक रात गुजारने के बाद हम अगली सुबह निकले 'काजा' के लिए। स्पीति नदी के आस-पास फैली यह हिमालयी मरुभूमि भारत और तिब्बत का सीमावर्ती क्षेत्र है और 'स्पीति घाटी' के नाम से जाना जाता है। यहां पर बसने वाले लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। बाइकर्स के लिए यह डैस्टिनेसन पॉइंट है। यहां आज स्पीति महोत्सव चल रहा है। हमने भी रंगारंग कार्यक्रम का आनंद लिया। अगली सुबह हमने बस पकड़ी 'मनाली' के लिए। रास्ते में 'कुंजुम पास' 'रोहतांग पास' और 'हेलंग' जैसे उच्च हिमालयी दर्रे का शानदार सफर कर हम पहुंच गए हैं 'मनाली' पर्यटन के क्षेत्र में विश्व भर में पहचान रखने वाला यह हिल स्टेशन बेहद खूबसूरत नजारों से भरा है। यहां से वापसी होगी देहरादून के लिए और एकबार फिर से इन्तजार रहेगा प्रकृति की गोद में वापस लौट आने का। इस यात्रा से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, प्रकृति के कई रंग देखने को मिले और एहसास हुआ कि कितना भटक जाते हैं हम अपने जीवन की यात्रा में, प्रकृति जिससे कि हम समस्त जीवों की उत्पत्ति हुई है, आज रोजमर्रा की भाग-दौड़ में हम दिन-प्रतिदिन उससे दूर होते जा रहे हैं....







## दिल्ली-आगरा-जम्मू यात्रा

रामराज रेड्डी,

एनआरएससी, हैदराबाद



बहुत दिनों से मातारानी के दर्शन की अपार इच्छा थी। माता वैष्णो देवी के बारे में काफी कुछ सुना था, एक दिन सपरिवार वहां जाने की इच्छा थी। मेरे कुछ दोस्त जैसे दीप चंद, राकेश आदि मुझे वहां जाने के लिए बहुत प्रेरित करते थे। राकेश वैष्णो देवी को माता रानी के नाम से पुकारता था तो काफी अच्छा लगता था। जाने की इच्छा तो बहुत दिनों से थी, परंतु योजना अचानक बनी। मुझे और मेरे माता-पिता को माता रानी के दर्शन करने थे, तो जम्मू जाना था, बेटे को दिल्ली देखना था और पत्नी का सपना था ताजमहल देखना। एक साथ सभी को खुश करना चाहता था तो पहले दिल्ली जाने की योजना बनाई। मैंने दिल्ली जाने के लिए राजधानी ट्रेन में टिकट बुक किया। दिल्ली में रह कर घूमने के लिए इसरो अतिथि-गृह बुक किया फिर दिल्ली से ताजमहल की दूरी करीब 200 कि.मी. ही थी तो वहां से भी अग्रिम ही रेल टिकट बुक कर लिया और फिर जम्मू के लिए सोचा फ्लाइट ही बुक कर लूं। हमारे गृह-नगर, राजधानी से दूर होने के कारण मेरे माता-पिता को न कभी राजधानी एक्सप्रेस में जाने का मौका मिला, न कभी फ्लाइट में, तो फ्लाइट ही बुक कर लिया। योजना के अनुसार दिल्ली और आगरा घूमने की योजना पूरी हुई। फिर वैष्णो देवी मंदिर से संबंधित वेबसाइट में दर्शन के टिकट चैक किया तो टिकट उपलब्ध नहीं थे परंतु श्राइन बोर्ड के होटल उपलब्ध थे वो भी काफी सस्ते। परंतु होटल केवल एक ही दिन के लिए दे रहे थे तो दिए गए नंबर में कॉल किया और पूछा कि कमरा केवल एक ही दिन के लिए उपलब्ध है। क्या दर्शन एक दिन में संभव है? तो उसने कहा जी, बिल्कुल संभव है। फिर कमरा भी बुक कर दिया और अगले दिन के लिए वापसी फ्लाइट भी बुक कर आराम से सोच रहा था कि मैंने सारी योजनाएं बना ली। इन्हीं दिनों में कुछ दोस्तों के व्हाट्सएप स्टेटस में देखा तो वे भी माता वैष्णो देवी के दर्शन की तस्वीर लगाए थे। उनमें से एक दोस्त सत्येंद्र से बातचीत के दौरान पता चला कि कटरा पहुंचने के अगले दिन फ्लाइट बुक करके मैंने गलती की है। किसी कारण दर्शन में देर हुई तो फ्लाइट छूट सकती है। उसके अनुसार दर्शन तो जल्दी हो जाते हैं, परंतु पहाड़ चढ़ने और उतरने में बहुत समय लग जाता है, क्योंकि मंदिर से हवाई अड्डा काफी दूर था। फिर सोचा दर्शन के लिए हेलिकॉप्टर बुक कर लूं, ताकि फ्लाइट आराम से पकड़ सकू, पर हेलिकॉप्टर के लिए भी टिकट उपलब्ध नहीं थे। एक ही रास्ता था फ्लाइट कैंशल करना। पहले से ही फ्लाइट कैंशल का एक दुःखद अनुभव था फिर भी कैंशल किया। 2 दिन बाद की फ्लाइट बुक कर यात्रा की तिथि की प्रतीक्षा की और वो दिन आ ही गया।

हम दिल्ली के लिए रेलगाड़ी पकड़ने के लिए सुबह-सुबह की निकल पड़े। राजधानी में भी हमें जो सीटें मिली वो एक ही केबिन में मिली। राजधानी के यात्रियों को राजधानी द्वारा कुछ सेवाएं प्रदान की जाती हैं-सुबह-सुबह अखबार के साथ चाय, नौ बजे नाश्ता, दोपहर होते-होते दोपहर का भोजन परोस दिया जाता है। आपको शाकाहारी खाना है, या मांसाहारी भोजन, चयन तो आपको ही करना होता है। भोजन के साथ आइसक्रीम, दही, फ्रूटी आदि भी दिया जाता है। मध्याह्न भोजन कर थोड़े आराम किए कि नहीं, फिर शाम के स्नैक्स भी आपके पास आ जाएगा। फिर रात को रात्रिभोजन। ये सभी मुफ्त में दिया जाता है। सुबह होते ही हम दिल्ली पहुंच गए और ओला पकड़ कर इसरो गेस्ट हाउस के लिए रवाना हो गए। अतिथि-गृह पहुंच कर थोड़ा आराम कर फिर दिल्ली घूमने के लिए निकल पड़े। हमने **मयूर विहार के एड्रिन अतिथि गृह** में ठहरा। इस गेस्टहाउस को गूगल मैप्स में नहीं दिखाया जाता है तो हमने जब भी ओला कैब बुक किया तो ड्राइवर को हमारे पास आने में दिक्कत हुई; क्योंकि लोकोशन दाबते ही आस-पास के लोकेशन ले लेता था तो वो उस लोकेशन पर पहुंच कर हमें फोन करते थे। उन्हें घूमते-घूमते आना पड़ता था तो ओला वाले हमसे अतिरिक्त चार्जस लगा देते थे। शुरूआत हमने इंडिया गेट से की। इंडिया गेट में नेताजी की मूर्ति स्थापित किए जाने की वजह से इंडिया गेट को कुछ दूर से ही देखना पड़ा। आज के इस डिजिटल दौर में हर किसी के हाथ में मोबाइल फोन के होते हुए भी इंडिया गेट के पास कई फोटोग्राफर मिल जाएंगे जो आज भी तस्वीर खींचने को ही अपना रोजगार बनाया है। वे आपको एक दो तस्वीर के लिए मनवा ही लेंगे। मुझे भी मनवा लिया। मैंने जब कहा भाई मेरे पास मोबाइल है, हम खुद तस्वीर ले सकते हैं तो उसने यह बोल के हमसे तस्वीर के लिए मनवा लिया कि आपके पूरे परिवार को एक साथ हम ही फोटो खींच सकते हैं और हमारा





कैमरे भी मोबाईल से काफी अच्छा है। उससे बात करके ये बात तो समझ में आई कि मार्केटिंग करने वाले कोई भी सामान किसी को भी बेच देगा, बस बेचने का तरीका होना चाहिए। आमतौर पर हम इंडिया गेट के नज़दीक जा कर देख सकते हैं और फोटो खींच सकते हैं, परंतु कर्तव्य पथ (राजपथ) का उद्घाटन के कारण हमें कुछ दूर से ही इसे देखना पड़ा। इसी प्रकार संसद भवन और राष्ट्रपति भवन को भी दूर से ही देखना पड़ा। इसके बाद हम लालकिला पहुंच गए। हमारा गेस्टहाउस अक्षरधाम मंदिर से करीब 3 कि.मी. की दूरी पर ही स्थित है तो हम शाम को आराम से अक्षरधाम के लिए रवाना हुए। स्वामिनारायण अक्षरधाम मन्दिर एक अनोखा सांस्कृतिक तीर्थ है। इसे ज्योतिर्धर भगवान स्वामिनारायण की पुण्य स्मृति में बनवाया गया है। यह परिसर 100 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। इसे दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मन्दिर के रूप में **गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स** में भी शामिल किया गया है।

हमें अगले ही दिन आगरा जाना था। सुबह-सुबह हम रेल गाड़ी से निकल पड़े। सुबह नौ बजे हम आगरा पहुंच गए। हमारी योजना के अनुसार हम दिल्ली की तरह आगरा भी ऊबर-ओला के माध्यम से घूमना चाहते थे। परंतु वहां भी लोकल ड्राइवर ऊबर-ओला से बेहतर सेवा देने के नाम पर हमसे प्री-पैड टेक्सी बुक करवा लिया। वह बोले कि हमें ₹1500 रुपये दीजिए हम आपको पूरा आगरा घुमाएंगे। पूरे आठ घंटे तक आप कहीं भी घूम सकते हैं। अगर आप ऊबर बुक करेंगे तो आपको केवल एक ही जगह के लिए पांच सौ रुपये देने पड़ेंगे और वहां से स्टेशन के लिए फिर पांच सौ, मतलब हजार रुपये में आप केवल एक ही जगह घूमेंगे। हम आपको पंद्रह सौ रुपये में पूरा आगरा घूमा देंगे। फिर क्या इसने भी मार्केटिंग कर हमसे गाड़ी बुक करवा कर हमें आगरा घुमाया। आगरा में हमें सबसे पहले आगरा किला दिखाया गया। हम आगरा किला देखने निकल पड़े तो वहीं 2 घंटों से ऊपर समय लग गया। फिर क्या मध्याह्न भोजन के लिए ड्राइवर हमें रेस्टोरेंट ले गए। वहां से फिर हमें ताज़महल के लिए ले गए। ताज़महल जाने के रास्ते में हम ये सोच रहे थे कि हम तो पहले ही तीन घंटे बिता चुके हैं और हमारे पास तो तीन ही घंटे बचे हैं। ये तो ताज़महल के लिए कम पड़ जाएंगे, फिर और कुछ देखने के लिए हमारे पास समय ही नहीं रहेगा। हमारा ओला-ऊबर का आइडिया ही ज्यादा लाभदायक था। क्या करें हमें तो आठ घंटे का लोभ दिखाया गया था, मज़बूर तो हम ही हैं। हम चाह कर भी आठ घंटे का उपयोग नहीं कर सकते हैं। जो भी हो कैलकुलेशन करते करते हम ताज़महल पहुंच गए। ताज़महल देखने के लिए टिकट लेने थे, बहुत लंबी कतार लगी थी। देखा तो महिलाओं की लाइन अपेक्षाकृत कम थी, तो मैं अपनी पत्नी को हम सभी के आधार कार्ड देकर कतार में खड़ा करवा दिया। महिलाओं की लाइन अपेक्षाकृत छोटी थी परंतु इसमें भी 40 मिनट का समय लग गया। अंत में टिकट मिल ही गया और हम ताज़महल के लिए अंदर निकल पड़े। ताज़महल का इतिहास तो बच्चे-बड़े सभी की जुबान पर है कि मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी दूसरी पत्नी मुमताज महल की याद में ताज़महल का निर्माण करवाया था। हमें भी ताज़महल को देखते ही लगा वाकई यह दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारत है। इसे देखते ही हमें लगने लगेगा कि अलौकिक सुंदरता की तस्वीर ताज़महल पूरे विश्व में क्यों प्रसिद्ध है। ताज़महल की खूबसूरती को निहारने के बाद हम कितनी भी उपमाएं दें, वे सारी फीकी लगती है। मुगल बादशाह की मुहब्बत और सिद्धत का परिणाम ही है, ताज़महल को खूबसूरती का नायाब हीरा कहा जाता है। ताज़महल देखते देखते हमारे छह घंटे बीत चुके थे और क्या फिर स्टेशन के लिए निकलना था परंतु मैंने कहा तिरुपति बालाजी का भी दर्शन करा दो फिर हमें स्टेशन ड्रॉप कर दो। वे हमें बालाजी मंदिर तो ले कर गए, परंतु भगवान के दर्शन नहीं हो पाए क्योंकि मंदिर बंद था फिर क्या हमें ट्रेन भी पकड़ना था तो हम स्टेशन की ओर निकल पड़े और दिल्ली के लिए रवाना हो गए। इस प्रकार मेरे बेटे का दिल्ली घूमना और पत्नी का ताज़महल देखना पूरा हुआ। अब मेरे माता-पिता और मेरी इच्छा की बारी थी यानी माता रानी के दर्शन।



अगले दिन हम दिल्ली एयरपोर्ट से जम्मू के लिए स्पाइस जेट एयरवेज से निकल पड़े। हमारे साथ एक बड़ी ट्राली थी एक छोटा बैग था। ट्राली को कार्गो में डालने के लिए दे दिया। वहां स्थित मैडम ने हमसे पूछा कि सर, इसमें कोई इलेक्ट्रॉनिक सामान तो नहीं है? मैंने सोचा सारे इलेक्ट्रॉनिक सामान तो बैग में ही होंगे तो कह दिया जी, नहीं। फिर क्या बैग जांच करवा कर हम फ्लाइट के लिए निकल पड़े। फ्लाइट के रवाना होने से 15 मिनट पहले मेरे पास स्पाइस जेट से फोन आया कि आपको तुरंत सैक्यूरिटी गेट के पास जाना है। एक तरफ मेरे परिवार के लोग फ्लाइट चढ़ने के लिए कतार में लगे थे और दूसरी तरफ मुझे सैक्यूरिटी गेट के पास बुलाया जा रहा है। मैंने पत्नी को थोड़ा मोटीवेट करके बोला - "तुम बच्चों और माता-पिता को लेकर फ्लाइट चढ़ो। तुम तो इससे पहले कई बार मेरे साथ आए हो तो तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। मैं सैक्यूरिटी



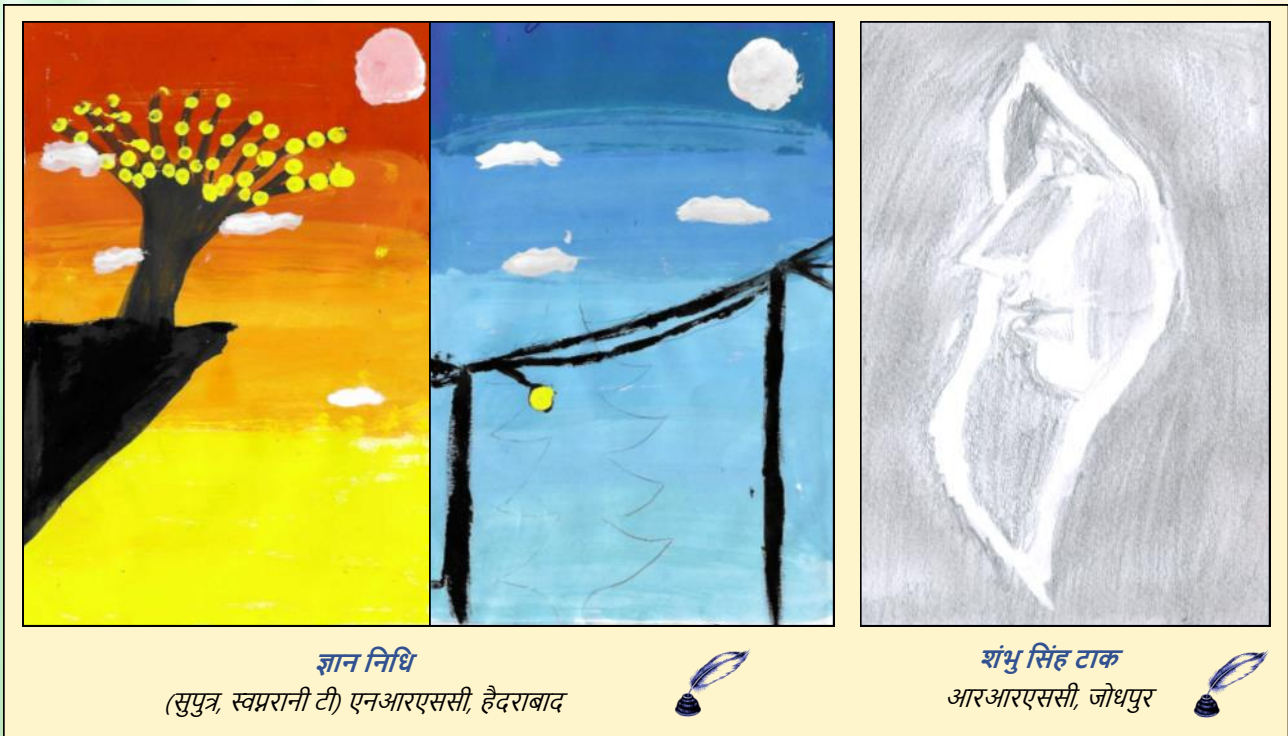
गेट के पास जा कर आता हूं।” स्पाइस जेट वाले मुझे सेक्यूरिटी गेट के पास ले गए तो पता चला कि मेरा पावर बैंक ट्रॉली में था मुझे लॉक खोल कर उसे बाहर निकालने के लिए बुलाया था। मुझे लगा मुझे पावर बैंक दे देंगे और बोलेंगे दोबारा ऐसा न करें। कोई इलेक्ट्रॉनिक सामान कार्गो में न लाएं। परंतु ऐसा नहीं हुआ। वे मेरे पावर बैंक ले लिए और बोले ये अब वापस नहीं हो सकता है। आप फ्लाइट में चले जाएं। मैंने ज्यादा बहस नहीं किया क्योंकि फ्लाइट अब बस 5 मिनट में रवाना होने वाली थी। मैं फ्लाइट के लिए निकल पड़ा। मैंने देखा पत्नी ने सभी को सीट पर बिठा दी है, सब मेरा इंतजार कर रहा है। मैंने सारी घटना के बारे में उन्हें बताया। बोला मेरे 2 हज़ार का नुक़शान होग गया। सबने बोला भूल जाओ ,ऐसा होते-रहता है। मैं भी इसे भूलना ही बेहतर समझा। माता-पिता के लिए हवाई यात्रा का प्रथम अनुभव था। हमें दो-दो विंडो सीट मिले थे, तो यात्रा का तो भरपूर मज़ा तो लेना ही था। फ्लाइट के उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद एयरहोस्टेस हमारे लिए सैंडविच और कई तरह के जूस ले कर आ गईं। इस प्रकार हमने हवा में खाना का भी मज़ा लिया। फिर एक घंटे में हम जम्मू पहुंच गए।



जम्मू पहुंचते ही हमारे सारे मोबाइल्स से नेटवर्क गायब हो गया। हमारे सारे मोबाइल्स अब गाने सुनने और गेम्स खेलने वाले खिलौने बन गए थे। एयरपोर्ट से अपना कार्गो लेकर जैसे ही बाहर की तरफ निकले तो वहां माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के स्टॉल पर मेरी नज़र पड़ी तो मैंने दर्शनपर्ची का अनुरोध किया। जो पर्ची मुझे वेबसाइट से नहीं मिली और एयरपोर्ट में आसानी से मिल गई। मोबाइल तो अब खिलौने बन चुके थे तो ऑनलाइन ओला-ऊबर का खेल अब नहीं खेल पाएंगे। वहां के लोकल टैक्सी ही हमारे लिए एक मात्र सहारा था। प्रीपैड टैक्सी लेकर कर हम मंदिर के लिए रवाना हुए। मंदिर एयरपोर्ट से काफी दूर था तो लगभग दो घंटे का समय लग गया। टैक्सीवाला हमें एक होटल में ले जाकर उतार दिया। हमने भी ज्यादा दाम-दर न करते हुए होटल ले लिए। होटल वाले ने वहां के सिम के लिए एक सिमवाले को होटल बुलवा दिया और वो सिम वाला अपना सारा मशीन लेकर होटल आ गया। मुझे बस पांच मिनट में केवल आधार संख्या लेकर सिम एक्टिवेट कर दिया। अब मेरे पास भी लोकल सिम आ गया तो व्हाटएप स्टेटस अपडेट कर दिया और थोड़े आराम कर शाम को मंदिर के लिए निकल पड़े। मेरे अनुसार मंदिर के ऊपर जाने के लिए सबसे उत्तम मार्ग तो पैदल ही है, परंतु जिनको चलने में तकलीफ हो उनके लिए घोड़े, पालकी, हैलिकॉप्टर, पिट्टू, अर्धकुवारी से बैटरी कार आदि उपलब्ध थे। हैलिकॉप्टर तो एडवांश में बुक करना पड़ता है, वरना नहीं मिलता है। मुझे तो पैदल जाने में कोई दिक्कत नहीं थी, परंतु मेरे माता को चलने में तकलीफ थी। उनके लिए और पत्नी के लिए घोड़े ले लिए। मेरे पिताजी को पैदल ही चलना था, उनका मानना था भगवान के पास पैदल ही चलना चाहिए। पालकी या घोड़े में जाने से सारे पुण्य तो उनको ही मिल जाता है। मेरा भी यही मानना था। मां-पत्नी और बेटी तो घोड़े पर चढ़ गए, परंतु मेरे सुपुत्र किसी भी स्थिति में मुझे छोड़ कर घोड़े पर चढ़ना नहीं चाहता था। उसकी जिद पर मुझे बहुत गुस्सा भी आया क्योंकि वो मेरे मां के साथ एक ही घोड़े पर चढ़ कर जा सकता था। परंतु वो हमारे साथ पैदल चलने की जिद कर रहा था। जिद में एक बात जरूर थी घोड़े पर मैं तभी चढ़ूंगा जब आप भी घोड़े चढ़ोगे वरना नहीं। इस बात पर एक तरफ मुझे गुस्सा बहुत आया क्योंकि उसके लिए पैदल चलना कितना मुश्किल है, पर उसका मेरे प्रेम देख कर खुशी भी हुई। मुझे लगा उसको घोड़े पर चढ़ने में डर लग रहा है, परंतु मेरे साथ उसे कोई डर नहीं है। इससे एक बात तो तय है कि मैं ही उसका हीरो था। मेरे साथ वो कहीं भी जाने को तैयार था। कुल मिलाकर हम तीन (मैं, पिताजी और बेटा) पैदल निकल पड़े और माता, पत्नी और बेटी घोड़े पर निकल पड़े। हमें पहाड़ पर चढ़ने में लगभग 6 घंटे लगे। मां और पत्नी को 3.5 घंटे लगे। फिर हम सब मिल कर रात 1 बजे माता के दर्शन के लिए निकल पड़े। रात के समय दर्शन के लिए उत्तम समय होता है। उस समय बहुत कम लोग थे तो दर्शन भी बहुत ही अच्छे से हुए। माता के दर्शन के बाद अब हमें भैरो बाबा के दर्शन करना था। भैरों बाबा के दर्शन के लिए दो मार्ग थे एक पैदल, दूसरा रौप वे। पैदल तो हम रातों- रात भी जा सकते थे। परंतु रौप वे के लिए हमें सुबह तक इंतजार करना था। मेरे बेटे को रौप वे चढ़ने का भी शौक था, तो हमने डोरमेटरी में कमरे लिए और थोड़े आराम के बाद सुबह रौप वे चढ़ कर भैरो बाबा के दर्शन किए। रौप वे तो मेरे लिए भी प्रथम अनुभव था। रौप वे से आस पास के सीन बहुती ही मनोरम लग रहे थे। बहुत ही आनंद आया। भैरो बाबा के दर्शन के बाद हम सभी पैदल ही होटल की ओर निकल पड़े, कुछ दूर चलने के बाद बेटा-बेटी को पिट्टू पर बैठा दिया और हम



सब लगभग तीन घंटे में होटल पहुंच गए। एक दिन आराम के बाद , हमें फिर अगले दिन ही वापसी के लिए गो-फस्ट प्लाइट पकड़नी थी। इस यात्रा की एक विशेषता थी कि एक ही यात्रा में हम , रेल - वे, एयर - वे और रौप - वे तीनों वेज का मज़ा ले लिए। वापस आते ही मैंने सारे वीडियोज [www.youtube.com/ramarajyamstudio](http://www.youtube.com/ramarajyamstudio) में अपलोड कर दिया ताकि कैमरे में कैद ये वीडियो यूट्यूब पर सुरक्षित रहे। मोबाइल में वीडियो कब डिलीट हो जाए कह नहीं सकते हैं, सोशल मीडिया में रखना ही सुरक्षित है। जब चाहे हम स्मार्ट टीवी पर या मोबाइल पर देख सकते हैं और दोस्तों में भी साझा कर सकते हैं। हालांकि सोशल में वीडियो डालने में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है, परंतु हमें सोच हमेशा पॉजिटिव ही रखना चाहिए।







## कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होगी.....@-30

संध्या पिस्से

एनआरएससी, हैदराबाद



आज जिस विषय के बारे में बात करना चाहती हूँ, यह मेरा निजी अनुभव है। जैसे कि शीर्षिक में जो कहावत का उल्लेख किया गया है की कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती है, यह मेरे जीवन का एक अद्भुत अनुभव है। यह जो @-30 का उल्लेख किया गया, ये मेरा घटा हुआ वजन है...मैं अपना अनुभव सभी से बाँटना चाहती हूँ। खास कर महिलाएं अपने प्रति ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती हैं, हर वक्त परिवार की जिम्मेदारियां, बच्चों का देखभाल करना, घर और दफ्तर का काम करना, बस इसी में पूरा वक्त बीत जाता है। मैंने भी कुछ ऐसा ही किया था अपने साथ भी....बच्चे होने के बाद धीरे-धीरे वजन बढ़ गया। मैंने कभी इतना ध्यान नहीं दिया, और अपने कामों में व्यस्त हो गयी थी। बढ़ा हुआ वजन के साथ जैसे-तैसे एडजस्ट कर रही थी कि एक दिन चेक-अप के लिए एक बड़े अस्पताल को जाना पड़ा, वहाँ का नज़ारा इतना तनावग्रस्त था, इतने सारे लोगों को अस्वस्थ, दुख देखने के बाद यह निश्चय किया कि किसी भी हाल में मुझे अपने स्वास्थ्य को सुधारना चाहिए।

यह 2020 फरवरी की बात है ... मैंने बहुत ज्यादा सोशल मीडिया में इसकी जानकारी के बारे में ढूँढ़ा कि कैसे डाइट फॉलो करना है, और व्यायाम किस तरह करना चाहिए आदि। इस वजन घटाने की सफर के दौरान मैंने रुजुता दिवेकर जी को अनुसरण किया। वह मशहूर हस्तियों के बीच एक बहुत प्रसिद्ध पोषण विशेषज्ञ हैं। लॉकडाउन के दौरान उन्होंने स्वस्थ रहने के बारे में फेसबुक पर कई वीडियो पोस्ट किए। मैंने हर दिन सुबह उठके एक घंटा व्यायाम किया और अपने भोजन का पूरा खयाल रखा। इसके साथ-साथ शाम में 45 मिनट तक चलती थी। किसी भी फैसी डाइट को ना अपनाते हुए, घर के खाने में थोड़े से बदलाव करते हुए मैंने अपना वजन घटाया है। कोविड की वजह से घर से काम करने का विकल्प भी था, मैंने उसका पूरा लाभ उठाया। जब हम किसी काम को पूरा करना चाहते थे तो समय खुद ब खुद मिल जाता है। लगभग 2.5 साल से अपना ध्यान रखते हुए सफलतापूर्वक 30 किलो वजन घटाया है। इसके बदले में अच्छा स्वास्थ्य पाया और साथ-साथ बहुत सारी प्रशंसाएँ भी मिलीं। इसे हासिल करने में व्यायाम के साथ साथ योगा का भी बहुत योगदान है।

मैं पहले दूसरों के किस्से सुन कर हैरान होती थी कि कैसे कोई इतना वजन कम कर सकते हैं। अब मुझे यह अनुभव से सीख मिली है। यदि आप खराब भोजन विकल्पों के कारण शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं हैं, तो आपके मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान होगा, इस चक्र को तोड़ने के लिए अपने आहार को साफ करें। सभी बीमारियों में से 90% जीवन शैली के विकल्पों से संबंधित है। जो भोजन आप खाते हैं, आप कितनी मात्रा में व्यायाम करते हैं, आप किन विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आते हैं, आदि। केवल 10% आनुवंशिकी के कारण होते हैं। जीवनशैली बदलना आसान काम नहीं है। इसके लिए आपको जल्दी उठाना होगा, आपको अपनी जिम्मेदारियों का ध्यान रखना होगा, आपको खुद के प्रति ईमानदार होना होगा। आपको अपनी प्राथमिकताओं का मूल्यांकन करना होगा। कोई भी आपके लिए यह करने वाला नहीं है। ये आपके लक्ष्य और आपके सपने हैं। जो कुछ भी आप चाहते हैं वह आपके साथ शुरू और समाप्त होता है। व्यायाम को एक दायित्व के रूप में देखना बंद करें। इसे जीवन शैली के रूप में देखना शुरू करें। **इस बात का उत्सव होना चाहिए कि आपका शरीर क्या- क्या कर सकता है**, न की आपने जो खाया उसके लिए सजा नहीं बनना चाहिए। छह महीने की निरंतरता से आपका पूरा जीवन बदल सकता है। आप कल से बेहतर बनने की कोशिश करें। निरंतर प्रयास करने से ही हम अपना मंजिल हासिल कर सकते हैं। निरंतरता सबसे ज्यादा मायने रखता है। केवल स्वस्थ भोजन आपको फिट नहीं बनाएगा। एक अस्वास्थ्यकर भोजन आपको मोटा नहीं करेगा। केवल कसरत आपको फिट नहीं बनाएगी। एक छूटा हुआ सेशन आपको मोटा नहीं करेगा। हमें संतुलित आहार का सेवन करना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सही मात्रा में प्रोटीन, फाईबर, खनिज, विटमिन जैसे पोषकतत्व मौजूद हो। स्वस्थ भोजन माने महंगे या फैसी खाद्य पदार्थ जैसे-सूखे मेवे और फल जैसे ड्रैगन, कीवी और एवाकाडो आदि का होना अनिवार्य नहीं है ... हमें स्थानीय और मौसमी भोजन और फलों का सेवन करना चाहिए जो हमारे आसपास उपलब्ध हैं ... जैसे अमरूद, अंगूर, काला जामुन, आम आदि। हम भाग्यशाली हैं क्योंकि हमारी भारतीय संस्कृति में हम अच्छे भोजन की आदतों के साथ पैदा हुए हैं। वजन घटाने का सबसे महत्वपूर्ण नियम है दिन भर में पर्याप्त पानी पीना। हममें से ज्यादातर लोगों को काम के घंटों के दौरान पानी पीने का ध्यान ही नहीं रहता है। यदि आप 7 घंटे से कम सोते हैं, तो बॉडी मास इंडेक्स (BMI) और वजन अधिक बढ़ने लगता है। दूसरों की तुलना में जो लोग 7 घंटे से कम सोते हैं,

उनका वजन अधिक बढ़ता है। वजन कम करना चाहते हैं, तो सोने-उठने का रूटीन बनाएं। जब आप 7 - 8 घंटे प्रतिदिन सोएंगे, तो इससे शारीरिक और मानसिक रूप से आराम महसूस होगा। सही मात्रा में नींद लेने से आपकी अधिक सक्रिय होने की प्रेरणा बढ़ती है और वजन घटाना आसान होगा। दिलचस्प बात यह है कि शारीरिक रूप से सक्रिय रहने से भी आपकी नींद में सुधार हो सकता है। आप यह सोचें कि- **स्वास्थ्य और फिटनेस एक बचत खाता जैसा है।** हर बार जब आप पौष्टिक भोजन खाते हैं या किसी प्रकार का व्यायाम करते हैं, तो आप अपने आप में निवेश कर रहे होते हैं। रोजाना छोटी-छोटी रकम जमा करें और समय के साथ बड़ा रिटर्न मिलेगा। आपका स्वास्थ्य जीवन भर के लिए सबसे बड़ी संपत्ति और आपका साथी है।

मैं सिर्फ यह बताना चाहती हूँ कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। अगर हम निरंतर प्रयास करेंगे तो हम अपनी मंज़िल जरूर हासिल कर पाएंगे। यह सिर्फ मेरा अनुभव है। मैं यह नहीं कह सकती हूँ कि सभी के परिणाम एक जैसे होंगे। अगर मेरा अनुभव आप में से किसी को भी प्रेरित या मदद करता है तो मुझे बहुत खुशी होगी। इस लेख को लिखने का मेरा उद्देश्य पूरा होगा।



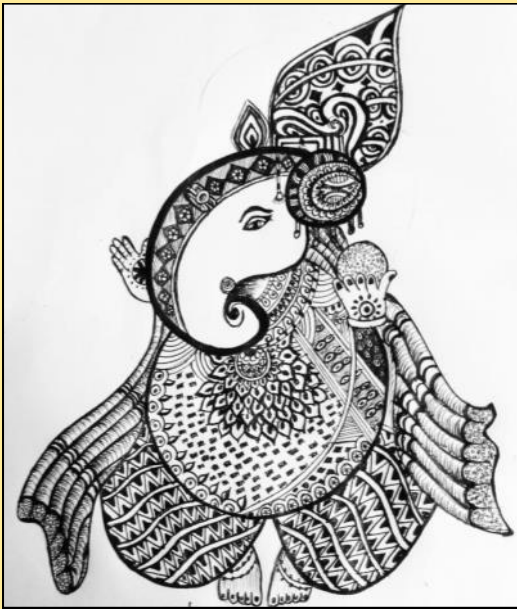
**आइज़ा**

(पुत्री श्री बी महबूब बाशा) आरआरएससी, बेंगलुरु



**असद**

(पुत्र श्री बी महबूब बाशा) आरआरएससी, बेंगलुरु



**संचिता मंडल**

(पत्नी सुब्रत मंडल), एनआरएससी, हैदराबाद



**मौनिका रेड्डी**

(पत्नी, रामराज रेड्डी), एनआरएससी, हैदराबाद





## मेरा वतन

एस. सुब्बलक्ष्मी  
एनआरएससी, हैदराबाद



ये मेरी भारत माता है,  
यहाँ हर नागरिक जन-गण-मन गाता है।  
यहाँ खेतों की हरियाली है,  
यहाँ होली और दिवाली है।  
यहाँ ईद और कव्वाली है  
यहाँ की माटी को है वंदन।

यहाँ मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारा है  
हिन्दू- मुस्लिम में भाई चारा है।  
ये है मेरा वतन, मेरी गंगा-जमुना  
ये है मेरा वतन, मेरे देश में चैनों अमन।

यहाँ राम और रहीम है,  
यहाँ कृष्ण और करीम है।  
यहाँ गीता और कुरान है  
यहाँ बाइबिल और अज़ान है,  
यहाँ तुलसी कृत रामायण है,  
व्यास का महाभारत है।

ये देश है गौतम गांधी का, ये देश है नेहरू शास्त्री का।  
यहाँ तिरंगा प्यारा है मेरा तन-मन वतन है।

यहां सैनिकों सर कटाएंगे  
मगर सर नहीं झुकाएंगे ।  
अपनी आज़ादी को हम हरगिस नहीं मिटाएंगे ।  
नक्सली आतंकवाद खात्मा कर  
हिन्दुस्तान में तिरंगा लहराएंगे।  
अपनी संस्कृति का सम्मान कर  
भारत को पुनः विश्व गुरू बनाएंगे।  
मेरा वतन प्यारा है...

वतन पर खुशियाँ कुर्बान है।  
इस मिट्टी पर जन्म लिया है  
मिट्टी की कीमत चुकाना है।  
अपने देश की रक्षा के खातिर  
जनता को जगाना है।

हमारी भाषाएँ अनेक हैं  
किन्तु वतन की राष्ट्रभाषा हिन्दी है।  
हिन्दी है हम वतन है  
हिन्दुस्तान हमारा।  
सारे जहाँ से अच्छा  
है हिन्दुस्तान हमारा।

चाहत वतन की है हमसे  
हिम्मत वतन की है हमसे।  
इज्जत वतन की है हमसे  
इन्सान के हम रखवाले।

हमें आपस में प्रेम है करना  
नफ़रत की लाठी है तोड़ना।  
स्वार्थ और लालच का खंजर है फेंकना।  
भ्रष्टाचार को है हटाना और ईमानदारी से है जीना।  
देश को आगे है बढ़ाना  
और विकसित है करना।

ए भारत, तुझपे कोई गम की आंच आने नहीं दूँ।  
ऐ वतन मेरे आबाद रहे तू।  
इस जहां में हमेशा याद रहे तू।  
मेरे वतन को मेरा अनगिनत प्रणाम।  
मेरे वतन को मेरा अनगिनत प्रणाम।।





## विदर्भ के पिछड़ेपन के जिम्मेदार कौन ?

धनंजय गो. निनावे  
आरआरएससी, नागपुर

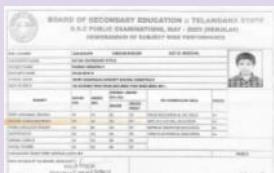


देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाने के बाद नागपुर सहित विदर्भ ने इन 75 वर्षों में तरक्की तो की है। बैलगाड़ी की जगह मेट्रो ने ले ली, कुटीर उद्योगों के स्थान पर कुछ बड़े उद्योग –धंधे आ गए, छोटी दुकानों के स्थान पर मॉल भी दिख रहे हैं। लोगो की आय भी बढ़ी है। फिर भी मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे जैसे शहरो से तुलना करने में मन, अनायास ही संकुचित हो जाता है। राजधानी से उप-राजधानी बनने का देश संभवतः केवल और केवल विदर्भ ने झेला। राजधानी की दर्जा छिनते ही हम दूसरों पर आश्रित हो गए। मायानगरी कृपा करे तो हम रेंगने हैं, वरना हाथ फैलाए बैठे रहते हैं। यह सही है कि हम उतना विकास नहीं कर पाए, जितने के हम हकदार हैं। पिछड़ने के कारण आंसू छलकते हैं। हलांकि, अभी सफर बाकी है। कई औद्योगिकी योजनाए सिर्फ कागजों पर ही पूरी कर दी गई। इससे कई उत्पादों का कारोबार बढ़ने के बजाए, 'बैकफूट' पर ही आ गया। 75 वर्षों में हमें जहां तक पहुँच जाना चाहिए था, शायद नहीं पहुंच पाए। इससे आगे हम आय टी, आईटीज, फार्मा, ऑटोमोबाइल, डिफेंस, एविएशन, एग्रो प्रोसेसिंग, एम आर ओ तक नहीं बढ़ पाए।

राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी को झेल रहे विदर्भ के कई दिग्गज उद्योगपति काफी नाराज हैं। कुछ का कहना है कि हम आगे बढ़े, लेकिन रफ्तार काफी कम है। पहले के युवाओ का जुनून ठंडा पड़ चुका है। कोयला, बिजली, मैगनिज उत्पादन हर क्षेत्र में हम पीछे हो रहे हैं। नागपुर में वो सब कुछ था, लेकिन सरकार हमसे दूर रह रही है। निर्णय लेने वाले अधिकारी, नेता नहीं मिले। समस्याएं बढ़ती चली गईं। हमसे काफी पीछे रहने वाले शहर हमारी नजरों के सामने आगे निकल रहे हैं। समस्याओं पर तब भी ध्यान नहीं दिया गया और आज भी उपेक्षा की जा रही है। तब की दौर में 90 फीसदी उद्योग चलते थे, आज 60 फीसदी भी नहीं रहे हैं। सिंचाई परियोजना अनंत काल से चल रही है, जिसके कारण कृषि और व्यापार नहीं बढ़ पाया। विदर्भ को जितना न्याय मिलना चाहिए था, नहीं मिल पाया। जबकि जल, जंगल, ज़मीन, कोयला सबकुछ होते हुए भी 'विदर्भ' पिछड़ा हुआ है।



उपलब्धियां



**मास्टर नितीश चौधरी**  
सुपुत्र श्रीमती उषा देवी को माध्यमिक परीक्षा में 9.7 /10 अंक प्राप्त करने के लिए संवाद टीम की ओर से हार्दिक बधाई एवं भविष्य की शुभकामनाएं।



**मास्टर शिवाजय सक्सेना**  
सुपुत्र डॉ. जया सक्सेना को उच्च माध्यमिक परीक्षा में ए ग्रेड के साथ 92 % (विज्ञान एवं गणित में शत प्रतिशत) प्राप्त करने के लिए संवाद टीम की ओर से हार्दिक बधाई एवं भविष्य की शुभकामनाएं।



**मास्टर श्रेयास**  
सुपुत्र श्रीमती संध्या पिस्से को माध्यमिक परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए संवाद टीम की ओर से हार्दिक बधाई एवं भविष्य की शुभकामनाएं।



**मास्टर प्रणीत**  
सुपुत्र श्रीमती टी सुजना को माध्यमिक परीक्षा में 83% अंक प्राप्त करने के लिए संवाद टीम की ओर से हार्दिक बधाई एवं भविष्य की शुभकामनाएं।





## मदद के हाथ

संतोष शर्मा



पत्नी ओम प्रकाश शर्मा, आरआरएससी, जोधपुर

एक पाँच छः साल का मासूम सा बच्चा अपनी छोटी बहन को लेकर गुरुद्वारे के एक तरफ कोने में बैठा हाथ जोड़कर भगवान से न जाने क्या मांग रहा था। कपड़े में मैल लगा हुआ था मगर निहायत साफ, उसके नन्हे-नन्हे से गाल आँसूओं से भीग चुके थे। बहुत लोग उसकी तरफ आकर्षित थे और वह बिल्कुल अनजान अपने भगवान से बातों में लगा हुआ था।

जैसे ही वह उठा एक अजनबी ने बढ़ के उसका नन्हा सा हाथ पकड़ा और पूछा : - "क्या मांगा भगवान से" उसने कहा : - "मेरे पापा मर गए हैं उनके लिए स्वर्ग मांगा, मेरी माँ रोती रहती है उनके लिए सब्र मांगा, और मेरी बहन माँ से कपड़े - सामान मांगती है उसके लिए पैसे मांगे"..

अजनबी ने फिर पूछा: - "तुम स्कूल जाते हो"..?

अजनबी का सवाल स्वाभाविक सा सवाल था।

हां जाता हूँ, उसने कहा।

अजनबी ने पूछा:- किस क्लास में पढ़ते हो ?

नहीं अंकल पढ़ने नहीं जाता, मां चने बना देती है वह स्कूल के बच्चों को बेचता हूँ।

बहुत सारे बच्चे मुझसे चने खरीदते हैं, हमारा यही काम धंधा है।

बच्चे का एक एक शब्द उस अजनबी की रूह में उतर रहा था।

"तुम्हारा कोई रिश्तेदार", न चाहते हुए भी अजनबी बच्चे से पूछ बैठा।

पता नहीं, माँ कहती है गरीब का कोई रिश्तेदार नहीं होता, माँ झूठ नहीं बोलती, पर अंकल,

मुझे लगता है मेरी माँ कभी-कभी झूठ बोलती है, जब हम खाना खाते हैं, हमें देखती रहती है। जब कहता हूँ

माँ तुम भी खाओ, तो कहती है मैंने खा लिया था, उस समय लगता है झूठ बोलती है।

अजनबी:- बेटा अगर तुम्हारे घर का खर्च मिल जाय तो पढ़ाई करोगे ?

बच्चे ने कहा:- "बिल्कुल नहीं"

अजनबी:- "क्यों"

बच्चे ने कहा:- इस स्थान पर बहुत सारे पढ़े-लिखे लोग आते हैं अंकल, पर हमें किसी ने कभी नहीं पूछा - पास से गुजर जाते हैं।

अजनबी हैरान भी था और शर्मिंदा भी।

फिर उसने कहा - "हर दिन इस गुरुद्वारे में आता हूँ, कभी किसी ने नहीं पूछा - यहाँ सब आने वाले मेरे पिताजी को जानते थे - मगर हमें कोई नहीं जानता।

"बच्चा जोर-जोर से रोने लगा"

अंकल जब बाप मर जाता है तो सब अजनबी क्यों हो जाते हैं ?

उस अजनबी के पास इसका कोई जवाब नहीं था...

ऐसे कितने मासूम होंगे, जो हसरतों से घायल हैं।

**सीख:** हम सभी का यह सामूहिक कर्त्व्य है कि हम अपने आसपास ज़रूरतमंद यतीमों, बेसहाराओं की यथासंभव मदद करें।



## वाइट (सफेद) ग्रेवी पनीर

**तैयारी का समय** – 15 मिनट, बनाने का समय – 20 मिनट, सामग्री – 250 ग्राम पनीर, एक कप दूध, एक चम्मच मैदा, एक चम्मच मक्खन, आधा चम्मच काली मिर्च पाउडर, नमक व 5 ग्राम चीज़।

**विधि** – पनीर को मनचाहे टुकड़ों में काट लें, कड़ाही में मक्खन गर्म कर मैदा डालकर भूने। मैदा का कलर हल्का भूरा हो जाए तो दूध डाल दें और कद्दू कस कर चीज़ डाल दें। इसमें नमक और काली मिर्च पाउडर डालकर पनीर के टुकड़े डालें। सभी चीज़ों को मिलाए व इसे गर्म परोसे।



## सुभाषित सुविचार

बी महबूब बाशा  
आरआरएससी, बेंगलुरु



प्रार्थना परमेश्वर के मन को बदलने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह भगवान द्वारा हमारे मन को बदलने का एक प्रयास है।

हम एक अजीब दुनिया में रहते हैं, जहां गरीब लोग भोजन पाने के लिए मीलों पैदल चलते हैं और अमीर भोजन पचाने के लिए मीलों पैदल चलते हैं।

सत्ता और पैसा जीवन के फल हैं, लेकिन परिवार और मित्र जीवन की जड़ हैं। हम फलों के बिना गुजर कर सकते हैं, लेकिन जड़ों के बिना कभी नहीं खड़े हो सकते।

धैर्य प्रतीक्षा करने की क्षमता का मापदंड नहीं है, बल्कि प्रतीक्षा करते समय एक अच्छा रवैया रखने की क्षमता है।

माली रोजाना पौधे को पानी दे सकता है, लेकिन फल ऋतु आने पर ही लगते हैं। धैर्य रखें, सब कुछ अपने समय पर होना तय है।

इस दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपको, आपके-अपने-विचारों से ज्यादा परेशान कर सके।

हम बहती नदी के एक ही पानी को दो बार नहीं छू सकते, क्योंकि जो धारा गुजर गई वह फिर कभी नहीं लौटती। अपने जीवन के हर पल का आनंद लें।

समस्याएं कभी लंबी नहीं होतीं, वे सिर्फ आपके जीवन की अनुभव पुस्तिका में हस्ताक्षर करती हैं और दूर चली जाती हैं।

जीवन सबसे कठिन पाठशाला है। आप कभी नहीं जानते कि आप किस कक्षा में हैं, आगे आपकी कौन सी परीक्षा होगी और आप धोखा नहीं दे सकते क्योंकि किसी और के पास समान प्रश्न पत्र नहीं हैं।

भाग्य आपके हाथ में नहीं है, लेकिन निर्णय आपके हाथ में है। आपके निर्णय भाग्य बना सकते हैं, लेकिन भाग्य कभी भी आपके निर्णय नहीं ले सकता।



## मेरा देश

प्रज्ञात्मिका दास  
(सुपुत्री, डॉ. प्रवीर कुमार दास)  
आरआरएससी, कोलकाता



सन उन्नीस सौ सैंतालिस में  
हम हुए आजाद  
यह देश है मेरा,  
नाम है इसका भारतवर्ष ।

मैं चाहती हूँ,  
इसे हमेशा देखना  
सुखी, समृद्ध और पेड़-  
पौधे से भरा हुआ।

भारत में हैं कई तरह के लोग,  
कई तरह के धर्म,  
यह देश है ऐसा जिसका,  
है समृद्ध इतिहास।

यह देश है  
सबसे अलग, बिल्कुल अलग  
गर्व महसूस करती हूँ,  
पैदा यहाँ होकर।

मेरी मातृभूमि, मेरा सम्मान  
कर सकती हूँ मैं, कुछ भी तुम्हारे लिए  
अगर तुम्हारे लिए प्राण भी देना पड़े  
तो संकोच नहीं करूँगी,  
यह प्रेम है कुछ ऐसा ।







मोहन प्रसाद  
आरआरएससी, कोलकाता



## पृथ्वी

पृथ्वी है एक ग्रह ऐसा,  
न है ब्रह्माण्ड में कोई ग्रह वैसा,  
इसके जंगलो में घने है वृक्ष,  
आसमान से दिखता है साफ़ अंतरिक्ष,  
पानी करता है यहाँ जीवन सफल,  
पेड़ पर भी उगते है स्वादिष्ट फल,  
रंग - बिरंगे, फूलों से ये है भरी,  
अपनी प्यारी वसुंधरा,  
नीली गहराई में है बसा,  
समुद्र अलग - अलग जीवों से भरा,  
पर हमें सता रही है एक बला,  
नाम है जिसका ग्लोबल वार्मिंग,  
जो है नतीजा मनुष्यों के बुरे काम का,  
शिकार, प्रदूषण एवं रसायनों के कारण,  
प्रकृति का है बुरा हाल, अगर हमें है उसे रोकना,  
पढ़ना होगा हमें एकता का पाठ,  
मिलजुल कर करना होगा इस मुसीबत का सामना



अतिन (पुत्र आरती पॉल)  
आरआरएससी, कोलकाता

## समय का सदुपयोग

आदि काल से ही यह माना जाता है कि जो लोग समय को नष्ट करते है उन्हें समय नष्ट कर देता है। यह कहावत हर काल में सार्थक है इसलिए हमें समय को सदा अच्छे कामों में ही लगाना चाहिए।

यदि धन नष्ट हो जाये तो उसे पुनः प्राप्त करना संभव है, मान - सम्मान किसी कारणवश न रहे तो उसे भी प्रयत्न करके पुनः प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन समय को दोबारा प्राप्त करना असंभव है।

समय बड़ा बलवान है, वह हर किसी के भाग्य को बदलने की शक्ति रखता है। हमें समय का सदैव सदुपयोग करना चाहिए। समय सफलता की एक मात्र कुंजी है। समय भागता है और हमें उसके साथ भागना चाहिए, जो लोग समय का साथ कदम से कदम नहीं मिला पाता वह जिंदगी की दौड़ में पीछे रह जाता है। हमें आज का काम कल पर नहीं टालना चाहिए। कबीर दास जी ने भी अपने दोहे की माध्यम से मानव जाति को यही समझाना चाहा है :-

कल करे सो आज कर , आज करे सो अब,  
पल में प्रलय आजाएगी, बहुरि करेगा कब।

अतः समय का सदुपयोग करने से हमें और हमारे परिवार को अनेक प्रकार का लाभ होता है। समय नष्ट करने वाले व्यक्ति को किसी न किसी मुसीबत का सामना करना ही पड़ता है। समय का अच्छे से उपयोग करने वाले मनुष्य जीवन में ऊँचाईया तो प्राप्त करते ही हैं, साथ ही साथ यश की प्राप्ति भी कर लेते है।

अंग्रेजी में समय के बारे में एक प्रसिद्ध कहावत है - "टाइम इज गोल्ड" अतः समय की कीमत पहचान कर उसके अनुसार कदम से कदम मिलकर चलने से मनुष्य को अवश्य सफलता प्राप्त हो ही जाती है।





## आजादी का अमृत महोत्सव

कन्हैया कुमार

एनआरएससी, हैदराबाद



15 अगस्त 2022 को देश आजादी के 75 वीं वर्षगांठ मना रहा है। आजादी की 75 वीं वर्ष गांठ को मनाने के लिए आजादी के अमृत महोत्सव का आगाज हुआ। आजादी के पर्व को समझने के लिए अमृत वर्ष का जानना जरूरी है। अमृत महोत्सव एक महत्वपूर्ण दिन है, जैसे किसी व्यक्ति की 75 वीं जयंती। आजादी के अमृत महोत्सव का मतलब स्वतंत्रता सेनानी से प्रेरणा का अमृत। इसकी शुरुआत माननीय प्रधान मंत्री ने 12 मार्च 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव का आगाज किया। यह महोत्सव 75 सप्ताह तक मनाया जाएगा, यानी 15 अगस्त 2023 मनाया जाएगा। आज भारत का अपना है और निरंतर नए उत्थान को पार कर रहा है। लेकिन भारत जब गुलामियों की बेड़ियों से जकड़ा हुआ था तब देश को स्वतंत्र करने के लिए बहुत से सपुतो ने अपना बलिदान दिया जैसे कुछ लोग आजादी के लिए संघर्ष किए और इनके लिए बलिदान दिया। इसलिए आजादी के अमृत महोत्सव सभी लोगों को सही मायने में बहुत जरूर है। आजादी का अमृत महोत्सव किसी जाति, धर्म या किसी राज्य का नहीं, बल्कि संपूर्ण देश भारत के लिए महत्वपूर्ण है। अमृत महोत्सव एक राष्ट्रीय महोत्सव है। यह विचारों का अमृत है, नए संकल्प, आत्मनिर्भरता का अमृत है। आजादी का अमृत महोत्सव सभी संस्थानों में धूम धाम से मनाया जाता है। आजादी के इस अमृत काल में हर घर तिरंगा अभियान चलाय गया। इसका मतलब भारतीयों के देश प्रेम की भावना से जोड़ना है।

“ 75 साल हुए आजादी के, चलो फिर आज एकता दिखाते हैं।

आओ सब मिल कर आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हैं”

“जिन वीरों ने दिलवाई आजादी ये हमको,

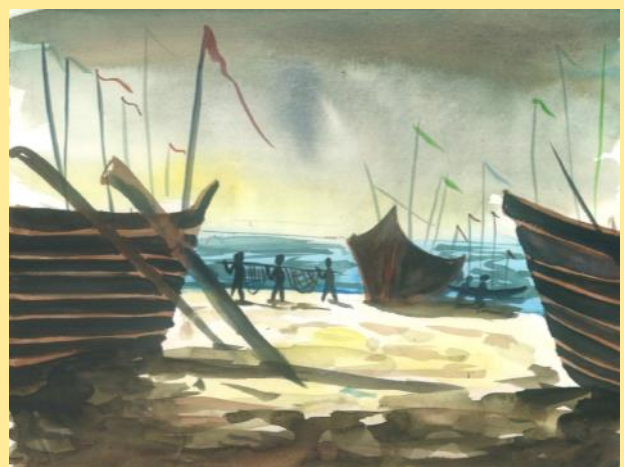
उनका पर्व आया आज फिर।

झेला दुश्मन का वार सदा, रहेंगे हम उनके कर्जदार सदा”



तन्मय कुमार

(सुपुत्र अमित कुमार) आरआरएससी, कोलकाता



हृदया

(पत्नी अमित कुमार) आरआरएससी, कोलकाता







## रिटायरमेंट (जिन्दगी से नहीं, केवल कार्यालय से)

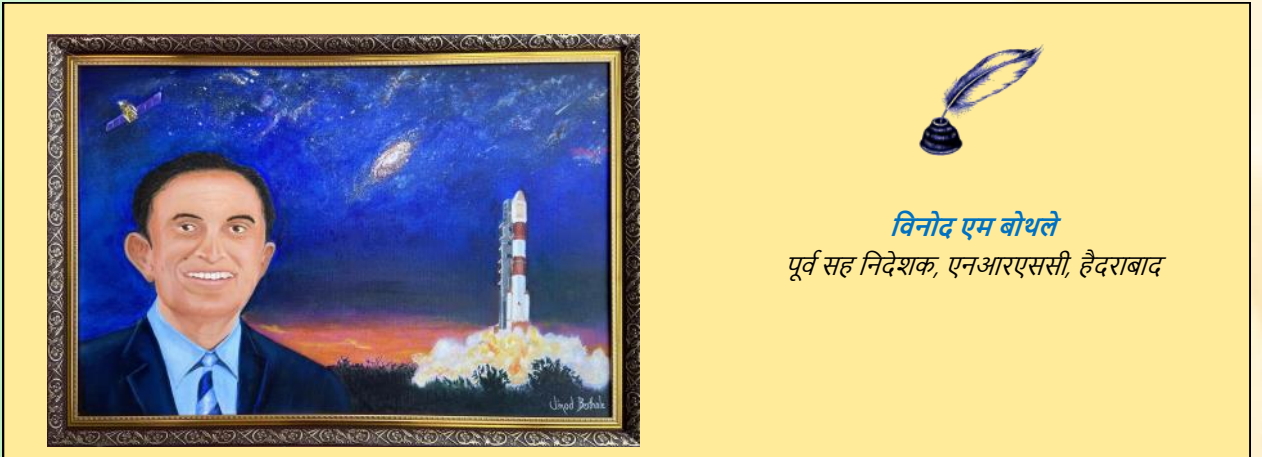
डॉ. एन अपर्णा,  
एनआरएससी, हैदराबाद



आजकल एनआरएससी में सेवानिवृत्ति का दौर चल रहा है। हर महीने एक या दो और कई बार पांच-पांच लोग एक साथ रिटायर हो रहे हैं। मैंने तो यह भी सुना है कि 2024-25 तक 80% लोग एनआरएससी से रिटायर हो जाएंगे। अभी तो नई प्रवाह यानी नये लोग कहीं दूर-दूर तक नहीं दिखाई दे रहे हैं। आज इस कहानी में मैं नए लोगों की बात नहीं करना चाहती, पर अभी जो रिटायर हो रहे हैं और होने वाले हैं, उनकी बात करना चाहती हूँ।

जब भी कोई व्यक्ति रिटायर होते हैं तो उसके समूह वाले उसको विदाई पार्टी देते हैं। सब उनके बारे में अच्छा बोलते हैं और रिटायर होने वालों की प्रशंसा करते हैं। फिर, प्रशासन की ओर से भी विदाई दी जाती है। अगर कोई महिला कार्मिक सेवानिवृत्ति होती है तो एनआरएससी महिला समिति भी उसको विदाई पार्टी देती है। जिस दिन विदाई पार्टी हो, उसी दिन उस व्यक्ति के परिवार को भी बुलाया जाता है। उसी दिन सब लोग उनके परिवार से मिलते हैं। उसी दिन सही मायने में हम उस व्यक्ति को जानते हैं। उनकी उपलब्धियाँ, उनके बच्चों के बारे में और उनकी ताकतों को। उस दिन उन्हें जानने लगते हैं तो दूसरे दिन से वह दिखाई नहीं देते हैं। जब इन रिटायर कर्मियों को मंच पर देखते हैं, तब कई बार पहचाने हुए चेहरे जो कि बिलकुल बदले नहीं और कई बार पहचाने हुए चेहरे जो कि पूरी तरह से बदल जाते हैं।

इसमें से हमें दो सीख तो जरूर लेनी है। एक तो हम इतने साल से एक साथ काम करते 30-35 साल के बाद भी हम एक दूसरे के बारे में बहुत कम जानते हैं। हमारे आपस में बांड नहीं है क्योंकि हम कभी भी कार्यालय के बाद अपने परिवार के साथ कभी नहीं मिलते। यह इसलिए कि हम बस भाग दौड़ में लगे रहते हैं और पता नहीं किस के पीछे भागते हैं। मुझे याद है, मेरे पिताजी टीबीआरएल में कार्यरत थे और हम सब लोग एक कोलनी में रहते थे और सब त्योहार एक साथ मनाते थे। एक दूसरे के घर आया-जाया करते थे और एक दूसरे का सुख-दुख बांटते थे। अब तो केवल व्हाटएप ग्रुप है और इसी में सब कुछ शेयर करते हैं। इसीलिए न हम किसे को जानते हैं और न ही उनके सुख-दुख के साथी बनते हैं। मुझे लगता है कि चलो वापिस चलें और लोगों से मिलें और उनके सुख-दुख के साथी बनें। दूसरी बात यह कि हाल ही में मैंने अपने एक वरिष्ठ अधिकारी को रिटायर के मंच पर देखा। वह ठीक से चल भी नहीं पा रहे थे और न ही उनमें बोलने की ताकत थी। यह एक ऐसे वैज्ञानिक थे जो कि रात-रात भर कार्यालय में ही रहते थे। हर सेमिनार, हर मुख्य बैठक में इनको प्रस्तुति करना होता था और हमारे जैसे नौसिखिया हमेशा उनको सुनने में उत्सुक रहते थे। वह ज्ञान के भंडार थे, जब भी हमें कुछ नहीं आता तो हम उनसे पूछते। शनिवार हो या रविवार, वे हमेशा कार्यालय में रहते। उन्हें देखकर आभास होने लगा कि स्वास्थ्य जो है वही सबसे ऊपर है और कुछ नहीं। हमें भगवान ने एक ही शरीर दिया है और हमें इसे ध्यान से रखना है। इससे प्यार करना है। कार्य और जीवन में संतुलन बनाए रखना है और दिमाग को रिलैक्स रखना है। समय से घर जाना चाहिए और परिवार के साथ समय बिताना चाहिए। रिटायर के बाद भी जिन्दगी है...और हमको जीना है...। इसके लिए हम मन को साफ, स्वस्थ, अच्छा और इरादों को ऊँचा और मजबूत रखना है।



विनोद एम बोथले  
पूर्व सह निदेशक, एनआरएससी, हैदराबाद

सितंबर-2021 से अगस्त 2022 के दौरान राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र / क्षेत्रीय सुदूर संवेदन  
केंद्रों से स्वैच्छिक / सेवानिवृत्त कर्मचारीगण

स्वायोज्याशा



अकनुरी श्रीनिवास



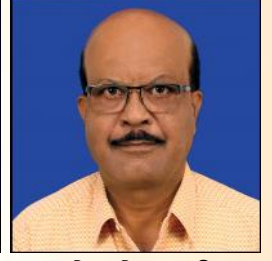
जी वेंकट रमण



नरसिम्हा कुमार टी



भास्कर चारी के



वेणुगोपाल वी



मंगला मणि एन



पुलैया बाबू टी



रघुनाथ मेनन के पी



सर्वेश्वर राव ए



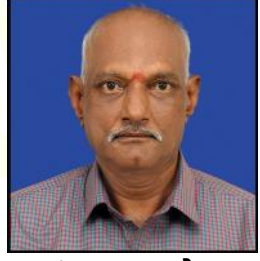
कृष्णा ए



सत्यलक्ष्मी रेड्डी टी



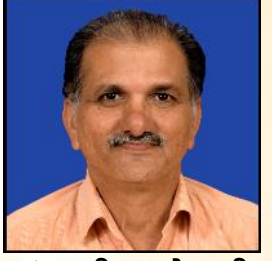
के श्रीनिवास राव



चंदन कुमार के



वी सुब्रमण्यम



संजय पी पलसोदकरी



दिव्येंद्र दत्ता



राज कुमार



वेंकटेश्वर राव के



रघुरामन एस



देवी प्रसाद वी



चंद्र शेखर झा



वेंकटरमण आई



कानू राय



सोमसुंदरम एमएस



पी चंद्रशेखर



जगन्नाथा राव



विनोद एम बोथले



टी रमेश



जयानंद



पद्मानाभ एस





एम विनोद कुमार



अंजय्या उप्पलांची



सुधीर मधुकर पलसे



कृष्णा राव के



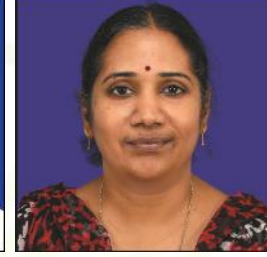
आशा सुरेश



एस रामचंद्र चार्युलु



कृष्णमा चारी



वाई पद्मजा



बिस्वदीप घराई



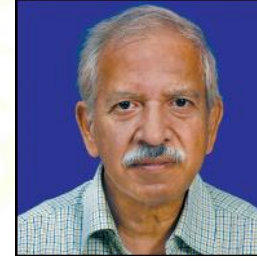
सत्यभामा एम वी



जवाहरलाल नेहरू वाई



सुब्बुनागुलु ए



शेषा साई एम वी आर



चंद्रशेखर रेड्डी सी

आप सभी को स्वस्थ, आनंद दायक भावी दिनों की हार्दिक शुभकामनाएं।

## उपलब्धियां



### पीएचडी उपाधि

डॉ. जया सक्सेना, वैज्ञानिक / इंजीनियर 'एसएफ' एवं उप प्रधान स्टूडेंट प्रोजेक्ट इंटरफेस प्रभाग, प्रशिक्षण शिक्षा एवं जनसम्पर्क समूह, प्रबंधन प्रणाली क्षेत्र, ने डॉक्टरेट (पीएचडी) की उपाधि मई 2022 में आईआईएस (IIS) (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), जयपुर, राजस्थान एवं एनआईटी (NIT), वारंगल के सह-पर्यवेक्षण से कंप्यूटर विज्ञान एवं आईटी विभाग में प्राप्त की है। इस उपाधि के लिए संपादक मंडल की ओर से हार्दिक बधाईयां।

### स्वर्ण पदक उपाधि

डॉ. चिंतला सुधाकर रेड्डी ने प्रो. वाई.एस. मूर्ति स्वर्ण पदक पुरस्कार - 2022 प्राप्त किया। उन्हें यह पुरस्कार भारतीय वनस्पति सोसायटी द्वारा 14 अक्टूबर, 2022 को लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा प्रदान किया गया। आपने जियोमैटिक्स इंजीनियरिंग और बायोलॉजी विषयों में लगातार तीसरी बार स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय और एल्सेवियर द्वारा दुनिया के शीर्ष दो प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में भी जगह बनाई है। इसके लिए संवाद संपादक मंडल की ओर से आपको हार्दिक बधाई एवं आगे के उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं...





